जाट सभा

सत्यमेव ज्यते

Souvenir

यकीने मोहक्कम अमल पैहयाम मुहब्बते फातेह आलम
जिहादे जिन्दगानी में ये है मर्दो की शमशीरें

(24-11-1881 to 09-01-1945)

DEEN BANDHU SIR CHHOTU RAM

135th Birth Anniversary

12.02.2016

प्रधान जी की कलम से.....

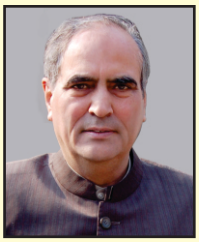

विश्व के सभी बड़े चितंक, उद्धारक और जननायक किसी न किसी परिस्थिति के संघात में पैदा हुये हैं । ऐसे ही वैचारिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्रांति के क्रांतिदूत दीनबंधु चौधरी छोटूराम हरियाणा की पावन धरती पर किसान पीड़ा–हरण हेतु 24 नवम्बर, 1881 में एक साधारण किसान परिवार में पैदा हुए । आज के सन्दर्भ में जब किसान आर्थिक संकट में उलझा पड़ा है, दीनबंधु छोटूराम के क्रांतिकारी विचारों की प्रासांगिकता और भी बढ़ जाती है। ऐसा मसीहा अब केवल सुखद स्मृति बनकर रह गया है ।

जाट सभा, चण्डीगढ़ बसन्त पंचमी और छोटूराम जयंती, किसान मसीहा चौधरी छोटूराम को स्मरण करने और श्रृद्धांजलि अर्पित करने हेतु नियमित रूप से मनाती आ रही है । इस प्रकार के पर्व को मनाने का यही मकसद होता है कि हम महान नेताओं की वाणियों का मनन करें और उन्हें कार्य रूप देकर उपेक्षित समाज हेतु कुछ करने का संकल्प लें । जाट सभा, चण्डीगढ़ का गठन 37वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है । यह किसी भी संस्था के लिए गौरवपूर्ण अवसर होता है । जाट सभा चंडीगढ़ का यह अन्तराल संघर्षमयी तो रहा परन्तु उपलब्धियों का भी रहा है । यहाँ से दीनबंधु विचारधारा जन जन तक प्रवाहित होती रही और एक संदेश देती रही :–

'संघे शक्ति कलोयुगे' । इस सभा का जाट भवन भी इसी सच्चाई का बखान कर रहा है । आओ हम सब मिलकर इस सभा को अगली मंजिल तय करने के लिए सुदृढ़ करें । दीनबंधु चौधरी छोटूराम एक महान क्रांतिदूत के रूप में भारत की पावन धरा पर अवतरित हुए तथा अपने विचारों, अपने कर्मों एवं अपनी सेवाओं से किसान जाति एवं शोषित वर्ग को लाभान्वित कर 9 जनवरी, 1945 को इस संसार से चले गए । तत्पश्चात् किसान संघर्ष का बीड़ा चौधरी चरण सिंह ने उठाया। वे अपनी प्रभावशाली भूमिका अदा कर रहे थे तो उनके साथ एक और जुझारू एवं संघर्षशील नेता चौधरी देवीलाल किसान कल्याण रथ यात्रा में शामिल हुये । अपने आलौकिक कारनामों से जगत ताऊ हो गये । जाट सभा चण्डीगढ़ अपने इन महान पुरूषों की जीवनियों पर सघनता से विचार करती रहेगी और किसान समृद्धि हेतु अपना योगदान देती रहेगी ।

जाट सभा चंडीगढ़ के इस छोटूराम भवन को हमें मन्दिर समझना चाहिए । जिस प्रकार बसन्त की सुखदायक भावभीनी मनमोहक ऋतु को पाकर जन मानस का हृदय पुलंकित हो उठता है उसी प्रकार इस महान भवन में सरस्वती की वंदना करने से भावी पीढ़ी का उद्धार हो जाता है । आओ यहां हम नियमित सरस्वती–पूजन करें व दीनबंधु छोटूराम विचार धारा का मनन करें ताकि कृषि प्रधान हमारा भारतदेश 'किसान कल्याण साम्राज्य' बन जायें । इसी पवित्र संकल्प के साथ ... . ।

डा॰ महेन्द्र सिंह मलिक,
आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
पुर्व पुलिस महानिदेशक हरियाणा
प्रधान, जाट सभा, चण्डीगढ़/पंचकूला।

DEEN BANDHU SIR CHHOTU RAM 135th BIRTH ANNIVERSARY AND BASANT PANCHMI CELEBRATIONS ON 12-02-2016

Published by :
JAT SABHA CHANDIGARH
2-B, SECTOR 27-A, MADHYA MARG,
CHANDIGARH
PH. : 0172-2654932, 2641127

Designed and Printed by :
ASSOCIATED PRINTERS, 226, Industrial Area, Phase-1, Chandigarh.
Ph. 0172-2650168. Mb. 98141-25627

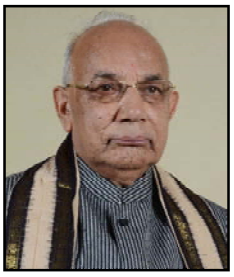

हरियाणा राजभवन, चंडीगढ़
Haryana, Raj Bhawan,
Chandigarh

Message

It is a matter of immense pleasure to know that the Jat Sabha Chandigarh is celebrating Basant Panchami and 135th Birth Anniversary of "Deen Bandhu Sir Chhotu Ram". To mark the occasion a souvenir is also being brought out.

Deen Bandhu Sir Chhotu Ram was a great peasant leader who devoted his life to the cause of betterment of farmers. One of his signal services to the peasantry was his mission to free them from the strangle-hold of money-lenders. Agrarian reforms that he effected and programme of rural reconstruction that he initiated reflect his deep love for the rural poor especially the farming community. The best way to pay homage to such a legendary is to live upto his high ideals and to work for a strong, prosperous and vibrant India of his dreams. I appreciate Jat Sabha Chandigarh for highlighting the ideology and efforts carried out by him.

I also congratulate the Jat Sabha 'Chandigarh and all the people on 135th Birth Anniversary of Deen Bandhu Sir Chhotu Ram and extend my warm wishes for the success of the celebration and publication of the Souvenir.

(Kaptan Singh Solanki)

मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़।
Chief Minister, Haryana,
Chandigarh

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि जाट सभा, चण्डीगढ़ एवं पंचकूला द्वारा बंसत पंचमी और दीनबन्धु सर छोटू राम की 135वीं जयंती के अवसर पर सर छोटूराम जाट भवन, पंचकुला में 12 फरवरी, 2016 को भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है।

मैं बंसत पंचमी और दीनबन्धु सर छोटूराम की 135वीं जयंती के अवसर पर जाट सभा के सभी पदाधिकारियों और सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

'दीनबन्धु' के नाम से लोकप्रिय सर छोटू राम का पूरा जीवन जनसेवा को समर्पित था। वे सभी वर्गों के हितैषी थे और उन्हें किसी जाति या वर्ग विशेष से नहीं जोड़ा जा सकता। सर छोटूराम का लालन–पालन ग्रामीण परिवेश में हुआ था, जिस कारण उन्होंने किसानों, मजदूरों और गरीबों की जिंदगी को करीब से देखा और उनके दु:ख, तकलीफों और कठिनाईयों को स्वयं भोगा था। वे गरीबों और किसानों के सच्चे हमदर्द थे।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी सर छोटूराम एक विचारशील, विवेकी एवं सिंद्वातवादी व्यक्ति थे। वे गरीबों, दलितों, शोषितों और उपेक्षित लोगों के सच्चे हमदर्द थे और उन्होंने जाति, धर्म और वर्ग के भेदभाव के बिना किसानों को संगठित किया और उन्हें सम्मान के साथ जीने के लिए प्रेरित किया।

दीन बन्धु सर छोटूराम को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके आदर्शों का अनुसरण करें और गरीबों, दलितों और उपेक्षित लोगों के सामाजिक–आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाने की दिशा में कार्य करें।

मैं समारोह के सफल आयोजन की मंगल कामना करता हूँ।

(मनोहर लाल)

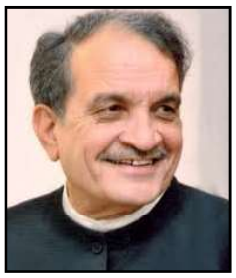

सत्यमेव जयते

ग्रामीण विकास, पंचायती राज और
पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री
भारत सरकार

MINISTER OF RURAL DEVELOPMENT, PANCHYATI RAJ AND DRINKING WATER & SANITATION

GOVERNMENT OF INDIA

Message

It gives me immense pleasure to know that Jat Sabha, Chandigarh is celebrating 'BASANT PANCHMI' & 135th Birth Anniversary of Deen Bandhu Sir Chhotu Ram on 12th February, 2016 at Sir Chhotu Ram Jat Bhawan, Panchkula.

Sir Chhotu Ram was a Champion of peasantry and the down-trodden of pre-partition era of the country. His honestry of purpose, vision and idealism, brilliant intellect, deep humanity, his struggle and sacrifices will be remembered by the coming generation of innovators and leaders forver. His mission and philosophy is relevant even in the present scenario of fast changing society. I am sure that consistent efforts of Jat Sabha will leave an everlasting impact and enable us to face the challenge posed by the 21st century.

I congratulate the office bearers and all members of the Sabha on this auspicious occasion of celebration of Sir Chhotu Ram Jayanti.

With best wishes

(Birender Singh)

शिक्षा एवं भाषा, तकनीकी शिक्षा,
पर्यटन, नागरिक उडड्यन, संसदीय कार्य,
पुरातत्व एवं संग्रहालय तथा
सत्कार सगंठन मंत्री हरियाणा

Education & Languages, Technical Education, Tourism, Civil Aviation, Parliamentary Affairs, Archaeology & Museums and Hospitality Minister, Haryana

संदेश

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा बसंत पंचमी एवं दीनबन्धु सर छोटूराम की 135वीं जयन्ती के अवसर पर 12 फरवरी 2016 को सर छोटूराम जाट भवन पंचकूला में एक भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर सभा द्वारा रहबर–ए–आजम सर छोटू राम के जीवन–वृतांत एवं कृतित्व पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

किसानों के मसीहा के नाम से लोकप्रिय सर छोटूराम ने कृषक वर्ग और खेतिहर मजदूरों के उत्थान के लिए काफी संघर्ष किया। उन्होंने किसान और देश के कमेरे वर्ग की वास्तविक हालत का अध्ययन बड़ी गम्भीरता से किया तथा उन पर हो रहे अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठाई और इन वर्गों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया।

आज हरियाणा प्रदेश रहबर–ए–आजम सर छोटूराम जी द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलकर प्रगति की नई बुलंदियों को छू रहा है।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिये अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद

(राम बिलास शर्मा)

Finance, Revanue & Disaster, Management, Excise & Taxation, Planning, Environment, Industries & Commerce, Labour & Employment, Law & Legislative, Institutional Finance & Credit Control, Industrial Training Minister, Haryana, Chandigarh.

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा दीनबंधु सर छोटूराम जी की 135वीं जयंती बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाई जा रही है। इस अवसर पर सभा द्वारा उनके जीवन–वृतांत एवं शिक्षाओं पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

किसानों के मसीहा सर छोटूराम ने कृषक वर्ग और खेतीहर मजदूरों के उत्थान के लिए काफी संघर्ष किया। उन्होंने बड़ी गम्भीरता से किसान और कमेरे वर्ग की वास्तविक हालत का अध ययन किया तथा उन पर हो रहे अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठाई।

आज हरियाणा सरकार ने भी सर छोटूराम जी द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलते हुए किसान हित में अनेक निर्णय लिए हैं। प्राकृतिक आपदा से खराब हुई फसलों का रिकॉर्ड मुआवजा किसानों को दिया गया और उनकी फसल के एक–एक दाने की खरीद की गई। फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्यों में बढ़ोतरी की गई हैं। 'हर खेत को पानी' मुहैया करवाने के उद्देश्य से अन्तिम छोर तक नहरी पानी पहुंचाया जा रहा है।

मुझे आशा है कि जाट सभा चंडीगढ़ इसी प्रकार से दीनबंधु सर छोटूराम के आदर्शों और शिक्षाओं का प्रचार–प्रसार करती रहेगी। मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिये अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

Abhimanyu

(कैपटन अभिमन्यु)

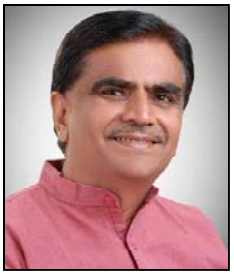

Agriculture & Development Panchayats, Irrigation, Animal Husbandry & Dairying and Fisheries Minister, Haryana.

Message

It gives me immense pleasure to know that Jat Sabha, Chandigarh/Panchkula is organizing a grand public function to celebrate the Basant Panchmi and 135th Birth Anniversary of Deen Bandhu Sir Chhotu Ram, on February 12, 2016 in the premises of Sir Chhotu Ram Jat Bhawan Sector-6, Panchkula.

It is equally heartening that a souvenir is also being brought out by the Sabha to highlight the life and deeds of distinguished dignitaries of the Society. Sir Chhotu Ram was greatly influenced by the intellectual society. There are many instances, which represent his value for education and compassion for the poor. The enactment of two agrarian laws was primarily due to his contribution. As a revenue minister, he brought in changes in the law which emancipated the peasants from the clutches of the money lenders and restored the right of land to the tiller.

Many of Jat leaders like Deen Bandhu Sir Chhotu Ram, Former Prime Minister Choudhary Charan Singh and Deputy Prime Minister Ch. Devi Lal had worked hard throughtout their lifes for improving the working conditions of farmers and the downtrodden.

My best wishes for the success of the celebration.

(O.P. Dhankhar)

Health & Medical Education, AYUSH,
Archives, Election, Sports and
Youth Affairs Minister, Haryana.

Message

It gives me immense pleasure to know that Jat Sabha Chandigarh/Panchkula is organizing a function to celebrate the Basant Panchami at Sector-6, Panchkula on February 12, 2016. A souvenir is also being brought out to mark this occasion.

The 135th birth anniversary of "Deen Bhandu Sir Chhotu Ram" is also being celebrated on this occasion. He was a social activist and well wisher of farmers. He did work for improving the socio-economic Status of- downtrodden farmer and laborer. The event will help to promote the Social and Cultural Harmony among people.

Haryana Government has taken a number of new initiatives to improve the Health infrastructure and facilities in all the hospitals of the state. To facilitate the citizen OPD record in all the State Government hospitals will be made online soon. A 'Centre of Excellence' of AYUSH is being set up at Panchkula for promoting Naturopathy as an alternative system of medicine. Our Government has decided to promote Yoga In a big way to improve the life style and physical fitness of the people of the State.

I extend my best wishes for success of the event and publication the souvenir.

(Anil Vij)

Public Woks (B & R), Forests and Industrial Training Minister, Haryana, Chandigarh

संदेश

मुझे यह जानकार अति प्रसन्नता हुई कि जाट सभा, चंडीगढ़ द्वारा 12 फरवरी, 2016 को बसंत पंचमी के अवसर पर किसान मसीहा सर छोटूराम की 135वीं जयन्ती मनाने के लिये पंचकूला में एक भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है तथा इस समारोह को यादगार बनाने के लिए एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

दीनबन्धु सर छोटूराम ने सदैव किसानों, खेतिहर–मजदूरों व गरीबों के सामाजिक, आर्थिक उत्थान के लिये संघर्ष किया। संयुक्त पंजाब के दौरान उन्होंने भूमि सुधार का बीड़ा उठा कर कानून बनाए। किसान मसीहा के रूप में सर छोटूराम का नाम न केवल देश में बल्कि पड़ोसी देश पाकिस्तान में भी जाना जाता है। पाकिस्तान की संयुक्त पंजाब एसेम्बली में सर छोटूराम का एक चित्र भी लगाया गया है जो हमारे लिए गर्व की बात है।

आज हरियाणा भी मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल के नेतृत्व में सबका साथ सबका विकास व अन्तोदय सिद्धान्त पर चलते हुए समाज के हर वर्ग के कल्याण के लिए कार्य कर रही है और हरियाणा में विकास के एक नये युग का सूत्रपात हुआ है।

समारोह के आयोजन के लिए मैं जाट सभा, चंडीगढ़ को विशेषरूप से बधाई देता हूँ। ऐसे समारोहों के आयोजन से न केवल हम युवा पीढ़ी को समाज की महान विभूतियों के बारे जानकारी दे सकते है बल्कि आपसी भाईचारे को मजबूत कर सकते है।

मैं समारोह के सफल आयोजन तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिये अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

(नरबीर सिंह)

विपक्ष के नेता,
हरियाणा, चण्डीगढ़
Leader of Opposition
Haryana, Chandigarh

संदेश

मुझे यह जानकर बेहद खुशी हुई कि जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला की ओर से दीनबन्धु सर छोटूराम का 135वां जन्मदिवस बसंत पंचमी के अवसर पर 12 फरवरी, 2016 को सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला में एक समारोह आयोजित कर मनाया जा रहा है और इस अवसर पर जाट सभा का यह प्रयास बेहद सराहनीय है क्योंकि दीन बंधु सर छोटूराम व जननायक चौधरी देवीलाल ने अपना पूरा जीवन किसान व कमेरे वर्ग के हितों के लिए संघर्ष किया और हमेशा किसान वर्ग के हितों की रक्षा की।

इंडियन नेशनल लोकदल पार्टी चौधरी देवीलाल के दिखाए रास्ते और उनकी नीतियों पर चलते हुए निरंतर किसान व कमेरे वर्ग का जीवनस्तर ऊँचा उठाने और उनके हितों की रक्षा के लिए हमेशा संघर्षरत रही है। मैं समारोह के सफल आयोजन व स्मारिका के लिए अपनी ओर से व अपनी पार्टी इंडियन नेशनल लोकदल की और से हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और बसंत पंचमी के पावन अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित ।

(अभय सिंह चौटाला)

Australian Government

PAUL TOOLE, MP
MEMBER FOR BATHURST ELECTORATE,
BATHURST FOR THE NATIONAL PARTY
OF AUSTRALIA

Message

I extend my deep gratitude and sincere thanks to you as well as all members of Jat Sabha Chandigarh/Panchkula for your kind invitation to attend the 135th Birth Anniversary Celebrations of Sir Chhotu Ram on 12th February, 2016 at Panchkula, Haryana (India).

However, I regret my inability to attend this due to my commitments and government engagements in Australia.

I have known Mr. Bobby Bazaad through his business and as a Citizen residing in my State Electorate area of Bathurst. Through Mr. Bazaad I have had the pleasure to learn of JATs and JAT Sabha.

I understand that Sir Chhotu Ram has been the Champion for the welfare of farmers and disadvantaged families and I extend my congratulations to JAT Sabha for their activities and efforts in the community.

I do hope that at some time in the future I will be able to meet with you and I do appreciate the courtesy of my message of goodwill being extended to you through the courtesy of Mr. M. S. Chaudhry a resident of Bathurst who is the father of Mr. Bobby Bazaad.

With best wishes

Paul Toole

(Paul Toole)

राज्य मंत्री, सहकारिता,
मुद्रण एवं लेखन सामगी एवं कृषि,
हरियाणा, चंडीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला द्वारा 12 फरवरी, 2016 को सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला में बसन्त पंचमी तथा दीनबन्धु सर छोटूराम की 135वीं जयन्ती मनाई जा रही है। इस अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन एक सराहनीय कार्य है।

इस प्रकार के आयोजनों से युवा पीढ़ी को समाज की महान विभूतियों के व्यक्तित्व से परिचित होने का अवसर मिलता है। दीनबन्धु सर छोटूराम सदैव किसानों, खेतिहर मजदूरों व गरीबों के सामाजिक–आर्थिक उत्थान के लिए संघर्षरत रहे।

मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल नेतृत्व में हरियाणा सरकार किसानों, मजदूरों और समाज के पिछड़े वर्गों के सामाजिक–आर्थिक उत्थान के लिए प्रयासरत है।

हरियाणा सरकार ने एक वर्ष की अल्पावधि में अनेक कल्याणकारी योजनाएं लागू की हैं। समाज के सभी वर्गों व क्षेत्रों का एक समान विकास किया जा रहा है प्रदेश में नागरिक केन्द्रित 150 सेवाएं ऑनलाईन की गई हैं, जिससे भ्रष्टाचार पर लगाम लगी है। इससे जनसाधारण के कार्य समयबद्ध और बाधारहित पूरे हो रहे हैं।

इस आयोजन की सफलता के लिए मैं आपको बधाई देता हूँ और स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(बिक्रम सिंह यादव)

Minister of State for Welfare of SCs & BCs, Social Justice & Empowerment and Women & Child Development, Haryana

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक हितों को बढ़ावा देने की दिशा में कार्यरत जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला द्वारा 12 फरवरी, 2016 को बंसत पंचमी के अवसर पर जाट भवन सैक्टर–6 पंचकूला में दीनबंधु सर छोटूराम की 135वीं जंयती के अवसर पर एक समारोह का आयोजन किया जा रहा है तथा स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

सर छोटूराम ने सदैव ही किसानों और समाज के गरीब लोगों के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्तर के उत्थान के लिए बल दिया। उत्तरी भारत में एक कद्दावर किसान नेता के रूप में उनका नाम जाना जाता है।

वर्तमान हरियाणा सरकार मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल के नेतृत्व में समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिए अनेक कल्याणकारी कार्यक्रम एवं योजनाएं चलाई जा रही हैं। सरकार सबका–साथ–सबका विकास सिद्धांत पर चलते हुए लोगों को भ्रष्टाचार मुक्त सुशासन प्रदान करने की दिशा में कदम उठा रही है। विभागों से ऑनलाइन सेवाएं आरम्भ होने से लोग खुश है। सरकार की इस पहल के लिए लोग बधाई दे रहे हैं।

मैं समारोह के सफल आयोजन व स्मारिका के प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(कृष्ण कुमार बेदी)

राज्य मंत्री, खाद्य एवं आपूर्ति,
परिवहन, पर्यटन तथा सत्कार,
हरियाणा, चंडीगढ़

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि दीनबंधु सर छोटूराम की 135वीं जयंती तथा बसंत पंचमी पर जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला द्वारा विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर सभा द्वारा स्मारिका का प्रकाशन करना भी एक सराहनीय कार्य है।

दीनबंधु सर छोटूराम एक सशक्त व्यक्तित्व के धनी थे। दीनबंधु ने कमजोर वर्ग के लोगों का अत्याचार से मुक्ति दिलाने के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग की बदोलत ही किसानों व खेतीहर मजदूरों का देश व समाज निर्माण में विशेष योगदान रहा है।

हरियाणा सरकार, समाज के सभी वर्गों एवं क्षेत्रों के विकास हेतु काम कर रही है। सरकार ने ग्रामीण विकास, पंचायती राज संस्थाओं को शिक्षित करने, शिक्षा, स्वास्थ्य, कला, खेल, पर्यटन, बिजली, पानी तथा आधारभूत सरंचना को मजबूत बनाने की अनेक योजनाएं शुरू की हैं। सार्वजनिक वितरण प्रणाली को मजबूत करने व पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए विभाग को ऑनलाइन किया जा रहा है।

आपके कार्यक्रम की सफलता के लिए मैं शुभकामनाएं देता हूं तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

(कर्णदेव काम्बोज)

सत्यमेव जयते

Member of Parliament
(Lok Sabha)

Message

Since times immemorial mankind has been celebrating the arrival of Basant. It marks the sprouting of hope and joy and is of particular significance to every agrarian society that toils to make the earth yield bountiful harvest so as to sustain life. Its significance was appreciated even by the successive waves of immigrants in the medieval Age and they adopted the fifth day of the lunar month of Basant even though they came from different climates. Thus it has remained and celebrated till the beginning of twentieth century when all joy and hope was drained from the life of the farmers of north India by the oppressive and exploitative system that left them in the yoke of debt and humiliation. In that state of hopelessness their messiah arrived in the form of Deenbandhu Sir Chhotu Ram. Steadfast in espousing the cause of the farmers he made the powers that be to realize the folly of keeping the farmers in a state of hopelessness and initiated a slew of reforms that freed the farmers from the debt and the constant fear of humiliation. In doing so Deenbandhu Sir Chhotu Ram also inspired them to wage ceaseless battle against all regimes, systems and institutions that refuse to recognize their services to the nation and society.

His ideals and teachings are relevant even today as farmers face old challenges in new form. Appropriately, Basant Panchami, the festival of hope and regeneration, optimism and resolve is also celebrated as the birthday of Deenbandhu Sir Chhotu Ram. I compliment the Jat Sabha, Chandigarh for bringing out this souvenir and best wishes for this joyous occasion

(Dushyant Choutala)

सत्यमेव जयते

JUSTICE PRITAM PAL,
Former Hon'ble Judge of Pb. &
Hry. High Court/Lokayukta, Haryana

संदेश

हम सब के लिये यह बड़े हर्ष का विषय है कि जाट सभा, चण्डीगढ़/पंचकूला द्वारा बसन्त पंचमी के अवसर पर *दीन बन्धु सर छोटु राम की 135वीं जन्म वर्षगांठ* 12 फरवरी, 2016 को मनाई जा रही है। इस अवसर पर, इस महापुरूष की याद में एक स्मारिका का विमोचन किया जाना है। इस सबके लिये मैं जाट सभा द्वारा मनाये जाने वाले समारोह की सफलता की कामना करते हुए आशा करता हूं कि उस महान आत्मा द्वारा बताये गये सिद्धान्तों और मार्गदर्शन पर चलने की हम सब प्रेरणा भी लें। वास्तव में दीन बन्धु सर छोटु राम ने अपनी ऊंची सोच और शुभ कार्यों से यह प्रमाणित कर दिखाया कि व्यक्ति एक निर्धन और साधारण परिवार में पैदा होकर भी देश और समाज के लिए बड़े असाधारण कार्य कर सकता है।

आपके इस समारोह की सफलता की शुभ कामनाओं के साथ।

(जस्टिस प्रीतम पाल)

गरीबों के मसीहा सर छोटूराम

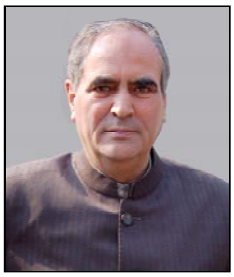

खेती करना व पशु पालना कोई नहीं चाहता क्योंकि दशकों से बताया जा रहा है कि खेती घाटे का सौदा है इसलिए 40 प्रतिशत किसान खेती छोड़कर शहर चले गए या आत्महत्या करने को मजबूर हैं। किसान के इस मर्म को सर छोटू राम ने समझा और उसके जख्मों पर मरहम लगाने का प्रयास किया। उन्होने कहा था कि सृष्टि का दोहन उतना करो कि जिससे आने वाली पीढ़ियां हमें दोषी ना मान लें। छोटू राम से दीन बंधु कब बन गए किसी को आभास तक नहीं हुआ। उनकी कथनी और करनी में अंतर ना था। सोच में मानवता की सेवा और समर्पण था। इसी लिए उन्होने भाखड़ा बांध के निर्माण को मूर्त रूप देने का प्रयास किया। अब पानी का दोहन इतनी गहराई से हो रहा है जहां कुदरत के पानी की री-चार्जिंग ना के बराबर है।

दीनबंधु किसी जाति-पाति या वर्ग विशेष के नहीं थे अपितु मानवता के पुजारी थे। उन्होने खेती किसानी को बढ़ावा देकर मानवता पर उपकार किया। उसका प्रत्योत्तर उनके जीवन काल में नहीं मिल सका अन्यथा परिणाम कुछ अलग होते। वे एक पूर्ण संस्था थे। एक ही वक्त में वे वकील, शिक्षा विद, राजनेता और किसान थे।

उन्होने अपनी तन्खाह से किसान कोष और शिक्षा कोष शुरू किए ताकि लोगों को जागृत किया जा सके और दबे कुचले तबके के लोग आगे बढ सकें। परिणिति छुपी नहीं है-पाकिस्तान का एक मात्र नोबल पुरस्कार विजेता अब्दुस कलाम उन्ही के कोष से पढ़ा और उसने अपने पुरस्कार पर कहा भी कि अगर छोटू राम ना होते तो अब्दुस कलाम इस मुकाम पर ना होते। अतः पाकिस्तान में आज भी दीनबन्धु सर छोटूराम के नाम की ज्योत प्रज्ज्वलित रहती है। वे सदैव पुकारते थे मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना इसलिये उनकों बडे स्नेह व इज्जत के साथ छोटूखान के नाम से सम्बोधित करते थे।

उनके पदचिन्हों का अनुसरण करने से ही समाज में व्याप्त अंधकार को काटा जा सकता है। उस महान आत्मा को जाति-पाति, धर्म, राष्ट्र के बंधनों से मुक्त कर देखा जाए तो आज भी किसान, कामगार और काश्तकारों का कल्याण हो सकता है । भाई भतीजावाद की कुप्रथा से छुटकारा मिलेगा। आज हम आर्गेनिक खेती की बात करते हैं जो वे दशकों पूर्व कह गए। स्त्री शिक्षा पर बल दे गए। बेटी बचाओ का संदेश अपने जीवन पर ढाल गए। आज स्वच्छ भारत एक नारा हो सकता है। सर छोटू राम का जीवन सरल सीधी और प्रेरणादायक है, था और रहेगा। किसान एक बेजुबान प्राणी है जिसे मेहनत करनी आती है। अपना हक मांगना नहीं ।

उनका कथन था कि भगवन इतना दीजिए, घट-घट रहे समाए, मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाए। लेकिन कृषक समाज इससे भी अधिक दयालु है। खुद भूखा रहकर मानव सेवा में जुटा है। इस समाज की विडंबना है कि इसे बोलते वक्त, वक्त की नजाकत समझ में नहीं आती और दुश्मन की पहचान नहीं कर पाता। इसीलिए इस समाज का कोई वाली-वारिस नहीं रहा लेकिन दीनबंधु सर छोटू राम इनके मरज को जानते पहचानते थे। उन्होने अपनी मृदुल एवं कुटिल भाषा से इस समाज से बेरोजगारी दूरी करने की सोची और उन्होने आह्वान किया था - ''भर्ती हो जा रे रंगरूट, यहां मिलै तनै टूटे जूते, उड़ै मिलेगें बूट।'' समाज उनके दर्शाए मार्ग पर चलकर आगे तो बढ़ा लेकिन जो प्रगति कर गया उसने समाज से नाता तोड़ लिया। इसी लिए आज भी सब से अधिक पीड़ा इसी समाज के हिस्से आ रही है। आज समाज सर छोटू राम का स्मरण कर उस मार्ग दर्शक की तलाश में है ताकि समाज में जन चेतना आ सके। दीनबंधु का मानना था कि किसान बिना मिले रिश्ते निभाना जानता है।

सत्ता विहिन दल आज स्वामीनाथन रिपोर्ट लागू करने के लिए आधारहीन बयानबाजी करते हैं। स्मरण रहे कि इस रिपो र्ट के अनुसार किसान के उत्पाद की कम से कम कीमत तय करने में लागत मूल्य के साथ-साथ पचास प्रतिशत लाभ देने की बजाहत की गई है लेकिन ऐसा करेगा कौन क्योंकि अभी तक एम एस पी तय करने का कोई मान्य फार्मूला नहीं है तथा गेंहू, चावल के इलावा दूसरी फसलों पर वह भी नहीं है। हां, सर छोटू राम जैसे कदावर किसान नेता की यह समाज राह देख रहा है कि वह इस रिपोर्ट को लागू करवा सके।

नई सोच नई तकनीक को अपनाकर ही समाज अपनी जरूरतें पूरी कर सकता है, इसी में सबका भला होगा। हमारी खेती और घरेलू जरूरतों के लिए बिजली पानी दोनों की व्यवस्था दीनबन्धु द्वारा योजनाबद्ध तरीके से बनाई गई भाखडा डैम से पूरी की जा रही है। वे कहते थे ''काम करो कि पहचान बन जाए - कदम चलो कि निशान बन जाए, लोग जिंदगी काट लेते हैं, ऐसे जीयो कि मिशाल बन जाए'' अतः उनका जीवन एक मिशाल बन गया। दीनबंधु कहते थे कि जो झुकता है वहीं पाता है, बाल्टी झुकती है भरकर निकलती है। बढते चलो काफिला बनता जाएगा। वे चाणक्य से मुतासिर थे कि काम की पहचान स्वतः बनती है वे किसान को एकजुट करने के लिए जीवन दर्शन दिखाते थे और कहते थे ''हिम्मतें मर्दा-मददे खुदा''।

किसान की विडंबना को उन्होने व्यक्त किया था कि किसान दो ढाई मण खाद्यान्न का बोझा उठा सकता है लेकिन खरीद नहीं सकता - ऐसे में एक सशक्त समाज की संरचना करना उनका ध्येय था तभी तो वे शिक्षा के पक्षधर रहे। किसान की माली हालत आरंभ से ही ऐसी रही है कि अनथक प्रयास के बावजूद वह अपनी दो जून की रोटी के लिए ही जुगाड़ करता रहा है। उसे अच्छा जीवन, कपड़े या जूते कभी मयस्सर नहीं होते। इस दर्द को बयां करते हुए उन्होने कहा था - ''जिस खेत से मयस्सर ना हो दहकां की रोटी, उस खेत के -गोसा-ए-गंदम को जला दो''। हालांकि उसकी साल भर की कमाई को जलाने की उनकी कभी मंशा ना थी बल्कि उसे फसल का उचित मूल्य दिलवाना ही था।

वास्तव में उनका जन्म 24 नवंबर 1881 का है और यह उनका 135वां जन्म दिवस है लेकिन उन्होने कहा कि मैं किसान हूं, मेरा जीना-मरना खेती के हिसाब से ही हो। कृषि जगत में हरित क्रांति का बीज अंकुरित करने के लिए लाहौर में एक दिन समारोह के दौरान उन्होने इसलिएअपना जन्मदिवस बंसत पंचमी को मनाने के लिए कहा था क्योंकि उनका मानना था कि बसंत पंचमी किसान-काश्तकार, कामगार का पर्व माना जाता है। इस दिन देश की तमाम सामाजिक संस्थाएं किसान, काश्तकार-कामगार के हितों व कल्याण के लिए सर छोटू राम द्वारा किए गए अथक प्रयासों को स्मरण करने तथा लगातार उपेक्षित हो रहे इस वर्ग को अपने हितों के प्रति जागरूक करने के लिए उनके (सर छोटू राम) कथानुसार बंसत पंचमी उत्सव को किसान दिवस के तौर पर मनाती है। हालांकि प्रकृति कभी इतनी सरल नहीं रही है कि हर बार उसके सपनों को साकार कर दे लेकिन आशा की किरण ही उस भोले-भाले किसान का जीवन है। किसान की फसल मौसम की मार और मौसम के सहारे ही फलती-फूलती है लेकिन उसके दावेदार कई हो जाते हैं। उसके उत्पाद की कीमत वातानुकूलित कमरों में बैठकर तय होती है जो कभी भी उसकी लागत के बराबर नहीं होती।

हर वर्ष की तरह आज किसान अपना आलू सड़कों पर फैंक रहे हैं क्योंकि करीब 4 रूपये किलो लागत से पैदा होने वाले आलू की कीमत 30 पैसे किलो उसे मिल रही है जबकि आलू से बने चिप्स का 61 ग्राम का पैक्ट 20 रूपये में यानि 330 रूपये किलो का बिक रहा है। किसान से 300-350 रूपये प्रति क्विंटल खरीद उपभोक्ता को 15 रू0 किलो मिल रहा है। किसान के 90 दिनों की कमाई 30 पैसे और व्यापारी की एक दिन की कमाई 9 रूपये 70 पैसे जो किसान के साथ धोखा नहीं तो क्या है? खाद, बीज, पानी, बिजली, तेल, दवाईयों के दाम हर बार बढ़ते रहते हैं और आज अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे

तेल की कीमत 28 से 30 डालर प्रति बैरल है जो कि भारतीय मूल्यांकन अनुसार 14.70 रूपये प्रति लीटर होना चाहिए लेकिन सरकार किसान तथा दूसरे उपभोक्ताओं को 45 रूपये डीजल तथा 60.60 रूपये के भाव से पैट्रोल बेच रही है। **जबकि पड़ोसी देश पाकिस्तान, श्रीलंका तथा बंगलादेश में पैट्रोल का भाव क्रमशः 37 रुपये, 39 रुपये तथा 40 रुपये है।** किसान को दी जाने वाली सब्सिडी के नाम पर भी भ्रष्टाचार का कोढ़ चिपका हुआ है। उसको मिलता है नकली बीज, खाद और दवाईयां वह भी दोगुने दाम पर। फसल ऋण के नाम पर आधुनिक साहूकार (बैंक) भी उसे लूटने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते। ऋण देने के लिए भी उससे रिश्वत ली जाती है और कई बार तो ऋण के भुगतान का इंद्राज भी नहीं किया जाता। किस्त देने के बावजूद ऋण जस का तस खड़ा रहता है। ऐसे हालात में सर छोटूराम के फसल जलाने के फरमान को ब्रह्मअस्त्र के रूप में लेते हुए आंध्र प्रदेश के किसानों ने कृषि छुट्टी का ऐलान किया है क्योंकि आमदनी ना होने की वजह से वे खेती नहीं करना चाहते। देश के अन्य हिस्सों में भी हालात अच्छे नहीं हैं।

देश में आए दिन किसान की आत्म हत्याओं की खबर मिलती रहती हैं। आखिर ऐसा कब तक? वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार हरियाणा में 5 एकड़ से कम जोत वाले किसानों की संख्या 67 प्रतिशत थी जो अब बढ़कर 80 प्रतिशत हो गई है। आज औसतन किसान परिवार के पास एक से अढाई एकड़ भूमि ही रह गई है। एक सर्वेक्षण के अनुसार आज 90 प्रतिशत किसान ऋण में दबे हुए है जो कि मुख्यतः किसान क्रेडिट कार्ड के सहारे गुजारा कर रहे हैं और फसल पकने से पूर्व ही किसान से छिन जाती है। इसके साथ ही कृषि लागतों में लगातार हो रही वृद्धि, सरकार की कामगार, किसान विरोधी नीतियों व कृषि लागत से पैदावार के कम मूल्यों के कारण किसान की माली हालत दयनीय होती जा रही है। जबकि राष्ट्रीय कृषि आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया है कि आज के हालात में 10 एकड़ से कम जोतों पर कृषि करना पूर्णतया घाटे का सौदा बन गया है। इसके बावजूद भी किसान की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए कोई कारगर उपाय नहीं किए जा रहे हैं। यूरोपियन यूनियन अधिक पैदावार होने पर किसानों को फसल छुट्टी की सलाह देती है तथा उसकी फसल भरपाई किसान को यूनियन करती है। इसीलिए वहां किसान खुशहाल है। सर छोटू राम ने किसान-मजदूर वर्ग को राहत देने के लिए कानून बनवाए थे लेकिन आज किसान पर रजिस्ट्री कानून 1882, भूमि अधिग्रहण कानून 1894 तथा भू-उपयोग वर्गीकरण कानून 1950 की भारी मार पड़ रही है। गत वर्ष पारित किया गया भूमि अधिग्रहण कानून (संशोधित) कुछ सीमा तक किसान हितैषी है जिसके तहत प्राईवेट सैक्टर के लिए भूमि अधिग्रहण करने के लिए कम से कम 80 प्रतिशत व जनहित कार्यो के लिए किसान की भूमि अधिग्रहण करने हेतू न्यूनतम 70 प्रतिशत भू-स्वामियों की स्वीकृति आवश्यक है। अधिग्रहित भूमि का मुआवजा भी बाजार दर से तीन-चार गुणा ज्यादा रखा गया है लेकिन इस कानून को लागू करने में वर्तमान सरकार असमर्थ है। शायर निदा फाजली ने कहा है :-

''पहले हर चीज थी अपनी मगर अब लगता है,अपने ही घर में किसी दूसरे घर के हम हैं।
वक्त के साथ हैं मिट्टी का सफर सदियों तक,किसको मालूम कहां के हैं कहां के हम हैं''।

सरकार के इशारे मात्र और थोड़े से सहारे के साथ किसान ने हरित क्रांति को फलीभूत कर दिया लेकिन उसके घर में लक्ष्मी (धन) या सरस्वती (शिक्षा) दोनों का ही अभाव है। आजादी के बाद विकास का जो माडल अपनाया गया उसकी सफलता और विफलता पर बौद्धिक बहस शुरू हो चुकी है। आज भारत की कुल आर्थिकता का 70 प्रतिशत करीब 48000 अरब रूपये की संपत्ति केवल 8200 बड़े अमीर घरानों के पास है और करीब 23 करोड़ की आबादी के पास केवल 30 प्रतिशत जो स्पष्ट करता है कि आर्थिक व्यवस्था चंद घरानों के पास गिरवी पड़ी है। एक रिपोर्ट के अनुसार एक दशक में 6 लाख करोड़ रूपये गैर कानूनी तरीके से बाहर भेजे गए और हर वर्ष 48 से 63 हजार करोड़ रूपये बाहर गए।

किसान की कठिन मेहनत से पैदा अनाज के भंडारण की भी उचित व्यवस्था आज नहीं हो पा रही है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार आज तक केवल 415 लाख टन खाद्यान्न रखने की ही व्यवस्था है। करीब 190 लाख टन अनाज मात्र पन्नियों से ढ़का है। हर वर्ष 58 हजार करोड़ रूपये का अनाज, फल तथा सब्जियां बर्बाद होने की बात सरकार ने स्वंय मानी है जबकि गरीब भूख से मर रहा है और किसान विरोधी नीतियों की मार झेलते हुए नेशनल क्राईम रिकॉर्ड ब्यूरों की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2004 में 18241 किसानों ने आत्महत्या की, वर्ष 2012 में 135445 लोगों ने आत्म हत्या की जिसमें 13755 जिसमें 12 प्रतिशत किसान थे और वर्ष 2014 में 5650 किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हुये। ये बड़े विडम्बना की बात है कि इस देश का अन्नदाता खुदकुशी करने पर मजबूर है किसानों की इस समस्या की तरफ आज तक किसी भी सरकार का ध्यान नहीं गया और ना ही किसी सरकार ने इस समस्या का निराकरण किया। सरकार भावी चुनावों के मद्देनजर लोकलुभानी नीतियां बना रही है जो किसी हालत में पूर्ण ना होने की आज से ही आशंका है। अर्थशास्त्री सरकार के दबाव में अपनी ही नीतियों में उलझे नजर आते हैं।

आज हुकमरानों द्वारा विशेष आर्थिक जोन (एस ई जैड) तथा स्टार्ट-अप के नाम पर किसान की भूमि औने-पौने भाव पर खरीद कर बड़े घरानों को सौंपी जा रही है जबकि दीन बंधु सर छोटू राम ने किसान कामगार के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए 1943-45 के दौरान सर सिकन्दर हयातखान के मंत्रीमंडल में बतौर राजस्व एवं कृषि मंत्री लाहौर में किसान कोष की स्थापना की थी और वे अपने वेतन से गरीब व जरूरतमंद बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए वजीफा व आर्थिक सहायता प्रदान करते थे। हरियाणा में प्रो0 शेर सिंह व पूर्व केन्द्रीय मंत्री चौ0 चान्दराम ने भी सर छोटूराम द्वारा स्थापित वजिफे कोष से अपनी शिक्षा ग्रहण की थी । किसान के हित के लिए वकालत करते हुए सर छोटू राम वायसराय तक से भिड़ गए। उन्होने कहा था - ''नहीं चाहिए मुझे मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।'' गरीब-मजदूर-मजलूम-किसान की लड़ाई लड़ते वे भगवान को प्यारे हो गए और आज किसान रो-रो कर सर छोटू राम को पुकार रहा है - ऐ चांद(दीनबंधु) बता दे तुम बिन तारों (किसानों) का क्या होगा, तुम तो छोड़ गए हम सारों (गरीब मजदूरों) का क्या होगा?

आज दीन बंधु सर छोटू राम द्वारा किसान, मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए किए गए कार्यों को तीव्र गति से चलाए जाने की आवश्यकता है ताकि ग्राम स्वराज का लक्ष्य पूरा हो सके। महान व्यक्ति अपने समय के युग पर्वत्तक होते हैं जो कि आगामी युगों की आधारशिला रखते हैं। दीनबंधु ऐसे ही युग पुरूष थे जिन्होने हरित क्रांति का सूत्रपात कर आधुनिक चेतना के सूत्रधार बने। अतः आज संपूर्ण किसान-मजदूर वर्ग पुकार रहा है कि कृषक-मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, उसके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतिशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अखंडता व प्रभुसत्ता संपन्नता को कायम रखने के लिए फिर से एक दीन बंधु सर छोटूराम की आवश्यकता है ताकि उनका ग्रामीण समाज, किसान, कृषक-मजदूर वर्ग के विकास का स्वपन साकार हो सके।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ब्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

Sir Chhotu Ram: Messiah of peasants

- S.S. Johl

Although Sir Chhotu Ram was born on November 24, 1881, at Garhi Sampla village in Rohtak district, he used to celebrate his birthday on Basant Panchmi, which falls today. The legislative reforms he introduced are relevant even today

THE peasantry during the British regime was the most exploited and neglected class in the country. It is considerably so even today. Small farmers in particular along with other working classes of the rural areas do not have the same infrastructure -- health as well as educational facilities -- as the urban sections of society have. The health centres and government schools are a poor apology for these facilities. For the rural people, the cost of education and health services available in the urban areas is beyond their reach because of distances involved. Their income levels are low. Consumption and expenditure patterns are no match to those of the urban population. This is one of the main reasons rural people migrate to cities and towns for work and live in slums. Above all, the rural people are not organised to fight for their rights. Farmers' organisations are deeply fragmented into more than dozen unions and are ineffective in achieving their objectives.

Sir Chhotu Ram

Exploitation of farmers

This was exactly what disturbed Sir Chhotu Ram, in the late thirties and early forties of the twentieth century. Looking back, it was a sort of dictum in the imperial regimes that the more the farmer was economically squeezed, the more he produced. In Japan, for example, during the King Meji regime, farmers were made to pay the revenue in money rather than the traditional system of paying certain share of the produce as revenue to the state. It was done so simply to financially squeeze the farmer so that in order to meet the enhanced revenue obligations, he had to produce more and more to earn that money.

Though differently, yet the same basic approach to squeeze the farmer was adopted in India by the British regime charging land revenue on the basis of per unit (acre) of land uniformly, irrespective of the size of holdings and income levels of farmers. It continues to be the same in the country even today. Whereas in other sectors of the economy there were (and are) exemptions on certain levels of income, there was no such exemption in the case of farm lands and there was no consideration as to the size of the land holdings and level of earning from the land! Even the poorest of the farmer with land of even less than one acre and under acute financial stress had to pay the land revenue at the same rate.

The other very serious problem of the peasants was the usurious interest rates charged by moneylenders and making arbitrary entries of dues from borrowers. In spite of farmers repaying loans year after year on every harvest, loan amounts kept on increasing. Ultimately, in many cases lands of farmers were attached in favour of the moneylenders. In fact, the Indian system of charging usurious interest rates dates back to the 1500 BC era. In Manu's system only the Vaisha caste could take to money-lending business and rates were charged according to the risk involved. In the Chanakya system interest rates varied between 24 and 240 per cent, depending upon who borrows, for what

purpose and the extent of risks involved. Coercive means to extract money from the borrower, even up to the killing of the son or wife of the borrower were not considered a big crime.

Inhuman treatment

In its considerably diluted form the system was quite coercive in the British regime also. Sir Chhotu Ram quoted several live examples of inhuman treatment meted out to peasant-borrowers. In one case he narrated the example of a farmer who, seeing his very bumper crop, thought of retiring the loan of the moneylender and celebrating the marriage of his grown-up daughter. Suddenly, he saw a locust swarm approaching and in matter of minutes his whole crop was eaten up. The moneylender came with a court decree within a few days. The farmer and his wife pleaded for mercy, promising to repay the loan during the next harvest. But the moneylender acted clumsy and suggested the farmer to sell his daughter that would get him good money. The farmer could not stand this humiliation and in a fit of rage, thrashed the moneylender, who died later. The court awarded imprisonment for life and the farmer died in shock. Ultimately, in spite of the heart-rending pleadings by the farmer's wife, the total 300 bigas of farmer's land was attached and given to the moneylender's family, putting the farmer's wife and six children on the road. Thus, the hapless peasants were in a dire state of poverty. The British regime had pushed the peasants into the quagmire of poverty and irretrievable indebtedness. The indebted small farmers lost their lands to moneylenders and they were turned into being serfs to the moneylenders. Sir Chhotu Ram, having deep sympathies with the downtrodden, could not bear this dismal situation.

Although there were some Acts that were intended to protect the farmers from exploitation such as the Deccan Agriculturists Relief Act of 1879, and a little improvement on that, the Punjab Land Alienation Act of 1900, yet these Acts suffered from many lacunae and loopholes that allowed the moneylenders and commission agents to usurp the lands of farmers and hold them in a perpetual debt trap.

New laws to help farmers

Sir Chhotu Ram right from his childhood passed through this atrocious situation of poverty and exploitation of the peasants. Coming to power through the Unionist Party, just in six years from 1937 to 1943, he got legislated more than one dozen Acts and amended the existing ones to protect the farmers from exploitation by moneylenders as well as market functionaries and traders. Special mention can be made of the establishment of cooperative banks and cooperative societies to serve as alternatives to moneylenders and private banks in order to eradicate farmers' indebtedness. Further he took some effective measures to provide water for parched lands and reduced the land revenue to nominal rates. His take was that governments should curtail their unproductive expenditure and reduce taxes on the people, especially on the hapless peasants, who were in acute financial distress. This approach has full relevance even today both for the Centre and state governments. Some of the other important Acts and amendments that go to his credit are:

The Punjab Land Alienation (Amendment) Acts of 1938 and 1939 (four amendments) that insulated the peasants' lands from attachments in lieu of debt incurred by them and debarred the non-farming classes from appropriating agricultural lands. Although this legislative limitation is no more there in Punjab of Sir Chhotu Ram, including the present-day Haryana, some states like Himachal Pradesh are following the system with some modification, yet more stringently.

The Punjab Debtors Protection (Amendment) Acts of 1938 and 1939 that introduced the system of "daam dupad" laying down the provision that if the debtor had repaid double the amount borrowed, the debt would be considered as fully paid up. Taking a cue from this, the Reserve Bank of India committee on farmers distress under my chairmanship recommended one of the provisions that a farmer's house and up to five acres of land should not be taken as collateral for

advancing the loans and these should not be attached to recover the loans due.

The Agricultural Produce Markets Act 1939 that introduced a fair deal both for agricultural producer-sellers and buyers through an open auction system in regulated market yards, eliminating completely the undercover deals struck by the commission agents and buyers without the farmer-seller knowing what transpired between them. Also transactions could be struck in notified market yards only. The system continued unchanged till recently, which has been fiddled with now through amendments in almost all the states of the country that allow the private operators, specially corporate houses to set up their private markets. This might break the monopoly of the commission agents and provide an alternative for the farmers, yet if not properly monitored, it might also lead to the exploitation of the innocent farmers by the corporates.

The other important laws introduced by him were: Suits Valuation Act 1938; Provincial Insolvency (Punjab Amendment) Act 1938; Punjab Registration of Mortgaged Lands Act 1938; Punjab Restitution of Mortgaged Lands Act 1938; Punjab Tenancy (Amendment) Act 1939; Punjab Consolidation of Holdings (Amendment) Act 1940; Punjab Weights and Measures Act 1941; Sugarcane Punjab (Amendment) Act 1942 and Relief of Indebtedness (Amendment) Act 1943.

These Legislative and some other potent executive measures adopted by the then Fasli Hussain government at his behest benefited the farmers, specially the small peasant proprietors, a great deal. Further, in order to awaken the farming community from the slumber of fatalism and inaction he wrote 16 articles in Urdu under the title of "Bechara Zimindar" in the Jat Gazatte published from Rohtak and campaigned very hard to organise the farming community against the injustices being meted out to them. I have given my voice to those articles in a C.D and these articles have also been translated into English by the Haryana Academy of History and Culture.

Today even, Sir Chhotu Ram lives in the hearts of the farming community for his efforts to alleviate the poverty of peasants and ameliorate the economic distress from which the farming community was suffering under the oppressive regime and unsympathetic usurious money lenders as well as exploiters in the agricultural markets.

Shaikh Saadi's Persian couplet "Saadia, marde niku-naam na meerad harghaz, Murda aun ast ki naamash b-nikuee na barand" (O Saadi, the person of good deeds never dies; the dead is the one whose name is not associated with any good deed) holds true for Sir Chhotu Ram in letter and spirit. Although he was born on November 24, 1881, at Garhi Sampla village in the district of Rohtak, he used to celebrate his birthday on Basant Panchmi. Today on the day of Basant Panchmi, a grateful salute to the great son of the soil and messiah of the poor peasants, Sir Chhotu Ram!

What he did ?

Sir Chhotu Ram wrote 16 articles in Urdu under the title of "Bechara Zimindar" in the Jat Gazatte published from Rohtak and campaigned very hard to organise the farming community against the injustices meted out to them.

He got passed the Agricultural Produce Markets Act, 1939, that introduced a fair deal both for agricultural producer-sellers and buyers through an open auction system in regulated market yards, eliminating undercover deals struck by commission agents and buyers without the farmers-sellers knowing what transpired between them

He reduced the land revenue to nominal rates. He believed governments should curtail their unproductive expenditure and reduce taxes on the people. This approach has relevance even today both for the Central and state governments

सभा का वार्षिक विवरण

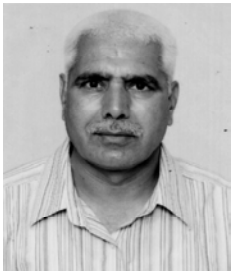

आर. के. मलिक
महा सचिव, जाट सभा चण्डीगढ/पंचकूला

जाट सभा चंड़ीगढ़ की स्थापना 14 नवम्बर, 1979 को हुई थी तथा 30 जनवरी 1982 को सरदार भूपेन्द्र सिंह सराओ आई.ए.एस. द्वारा दीन बन्धू सर छोटूराम यादगार शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक काम्पलैक्स का शिलान्यास किया गया।

जाट भवन चन्डीगढ़ परिसर में मुख्य हाल के नीचे उतना ही बड़ा बेसमेंट है जिसमें शादी–विवाह व सामाजिक समारोह आदि आयोजित करने का विशेष प्रबंध है। भवन परिसर के आंगन में एक विशाल बेसमेंट व उसके ऊपर चार मंजिला ब्लाक का निर्माण पूरा हो गया है। इस बिल्डिंग का उपयोग विद्यार्थियों के लिए होस्टल व पुस्तकालय की सुविधा प्रदान करने, परीक्षाएं आयोजित करने तथा सामाजिक समारोह आदि आयोजित करने के लिए किया जा रहा है। सभा के दीनबन्धु पुस्तकालय में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के विषयों पर लगभग 2000 पुस्तकें तथा अन्य ज्ञानवर्धक पाठ्य सामग्री उपलब्ध है एवं 15 पत्रिकाएं नियमित रूप से मंगाई जाती हैं। इस पुस्तकालय में किसी भी जाति व वर्ण का व्यक्ति सदस्य बन सकता है। श्री पवन कुमार बंसल, पूर्व केन्द्रीय रेलवे मन्त्री द्वारा जाट भवन की लाईब्रेरी के निर्माण हेतु सात लाख रुपये का विशेष अनुदान उपलब्ध करवाया तथा 10 लाख रूपया 11 कमरे बनवाने के लिए उपलब्ध करवाया गया।

अब जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा दीन बन्धु सर छोटू राम जाट भवन, सैक्टर 6 पंचकूला का निर्माण कार्य शुरू किया जा चुका है जिसका शिलान्यास चौ0 बीरेन्द्र सिंह, वित्त मंत्री हरियाणा द्वारा 21.01.2007 को किया गया था। भवन परिसर के आंगन में एक विशाल बेंसमेंट व उसके ऊपर तीन मंजिल ब्लॉक का निर्माण पूरा हो गया है। जिसमें शादी, विवाह व सामाजिक समारोह आदि आयोजित करने का विशेष प्रबन्ध है। पहली तथा दूसरी मंजिल पर 32 कमरे बनकर तैयार हो गये है जिसमें सुचारू रूप से ठहरने की व्यवस्था की गई है। जिस पर अब तक 5 करोड़ रूपये खर्च आया है। इसलिए सभी उपस्थित महानुभावों से अनुरोध है कि इस पावन कार्य में खुले दिल से सहयोग दें ताकि शेष कार्य शीघ्र पूर्ण किया जा सके।

गत वर्ष के दौरान जाट सभा की परम्परा के अनुसार निम्नलिखित सामाजिक, शैक्षणिक, खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

1. दिनांक 24 फरवरी, 2015 को सर छोटूराम की 135वीं जयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर सांसद रतन लाल कटारिया, मुख्य अतिथि थे और डॉ० एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत) ने समारोह की अध्यक्षता की। मेधावी छात्रों जो कि योग्यता के आधार पर प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से इन्जीनियरिंग, मैडिकल तथा अन्य उच्च स्तर के कोर्सों में प्रवेश प्राप्त कर लेते हैं एवं आर्थिक दशा कमजोर होने के कारण ऐसे कोर्सों में पढ़ाई कर पाने में असमर्थ होते हैं को आर्थिक स्थिति तथा योग्यता की जांच करने के बाद वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त जिन मेधावी छात्रों ने बोर्ड व यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं में 75 प्रतिशत आर्टस व कामर्स ग्रुप में व 85 प्रतिशत एवं अधिक अंक साईंस ग्रुप में प्राप्त किये हैं ऐसे छात्रों को 1100 रुपये नकद इनाम दिया जाता है और जो मेधावी छात्र प्रवेश परीक्षा के माध्यम से योग्यता के आधार पर आई आई टी/ आल इण्डिया मैडिकल कालेज, रोहतक मैडिकल कालेज/ पी ई सी चण्डीगढ़/एन.आई.टी कुरूक्षेत्र में प्रवेश प्राप्त करते हैं, उनको क्रमशः 5100/–, 5100/–, 2100/–, 2100/–, 2100/– रुपये नकद देकर पुरस्कृत किया जाता है। जाट सभा खेलों में उत्कृढट प्रदर्शन करने वाले सभा के सदस्यों या उनके बच्चों जिन्होंने राज्य, राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रथम, द्वितिय व तृतीय स्थान प्राप्त किया है। उनको निम्नलिखित पुरस्कार दिये जाते हैं।

   1. अर्न्तराष्ट्रीय स्तर प्राप्त करने पर 3100/– रुपये, 2100 रुपये व 1500 रुपये।

   2. राष्ट्रीय स्तर पर 2100 रुपये व 1500 रुपये

   3. राज्य स्तर पर 1100/– रुपये व 900/–

2. 23 मार्च, 2015 को इस प्रांगन में शहिद भक्तसिंह का जन्मदिन मनाया गया तथा ब्लड डोनेशन कैम्प का भी आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता श्री बी.डी. धालिया, आई.ए.एस ने की।

3. 04 जुलाई, 2014 को भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका सारा खर्च बी.एस.एम. मैमोरियल इंस्टीच्यूट आफ मेडिकल एण्ड एजुकेशन रिसर्च, निडानी जिला जींद (हरियाणा) द्वारा किया जाता है।

निबंध लेखन प्रतियोगिता 12 केन्द्रों पर आयोजित की गई । (1) मोती राम आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सैक्टर 27, चंडीगढ़ (2) चौ0 भरतसिंह यादगार खेल स्कूल निडानी (जीन्द), (3) भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, निडानी (जीन्द) (4) राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शामलो कलां, जीन्द (5) ज्ञानदीप मॉडल हाई स्कूल, सेक्टर–18, पंचकूला। (6) भवन विद्यालय, सैक्टर 15–ए, पंचकूला (7) राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जुलाना (जीन्द) (8) राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, किलाजफरगढ़ (जीन्द) (9) राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गतोली (जीन्द) (10) राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शामलो कंला (जीन्द) (11) राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, लजवाना कंला (जीन्द) (12) सी.एल. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर–11, पंचकूला। निबंध के आन दी स्पॉट विषय 'हमारी रोजमर्रा की जिदंगी में स्वास्थ्य और उसका महत्व या आज के विश्व में क्या महिलाएं वास्तव में सशक्त एवं सुरक्षित है या भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ना एक कठिन कार्य है।' यह निबन्ध प्रतियोगिता शहरी व ग्रामीण दो वर्गों में आयोजित की गई तथा प्रत्येक वर्ग के लिए निम्नलिखित पुरस्कार दिए गए :–

प्रत्येक ग्रुप में प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चार सान्तवना पुरस्कार दिए जाते हैं। पुरस्कारों में क्रमशः प्रथम विजेता को गोल्ड मेडल और 5100 रुपये, द्वितीय को सिल्वर मेडल और 3100 रुपये, तृतीय विजेता को ब्रोन्ज मेडल और 2100 रुपये और सान्तवना पुरस्कार 1000 रुपये, 900 रुपये 800 रुपये व 600–600 रुपये के प्रदान किये गए। इस अवसर पर प्रतियोगिता की अध्यक्षता डॉ० एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत) प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला, द्वारा की गई।

4) 24 नवम्बर, 2015 को स्कूल बच्चों के लिए पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था "इन्टरनेट का उपयोग और दुरूपयोग"। जिसमें 1400 बच्चों ने भाग लिया। पोस्टर प्रतियोगिता के लिए प्रत्येक ग्रुप (तीसरी से पांचवी, छः से आठवीं तथा नौवीं से बारहवीं तक) में पांच पुस्कार प्रदान किए गए। प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कारों के लिए क्रमशः 2100 रुपये, 1500 रुपये, 1100 रुपये नकद और पांचसों–पांचसोंपांचसों के दो सान्तवना पुरस्कार प्रदान किये गये। इस अवसर पर प्रतियोगिता की अध्यक्षता डा0 एम.एस. मलिक, आई.ए.एस (सेवानिवृत), प्रधान जाट सभा, चंडीगढ़/पंचकूला द्वारा की गई।

5) जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला द्वारा नेपाल के पीड़ितों को एक लाख रुपये की सहायता की गई।

6) कारगिल युद्ध के शहीदों के आश्रितों के लिए भवन में विश्राम व रहने, खाने की

मुफ्त तथा ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए उचित व्यवस्था की गई है।

7) जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला एक सामाजिक तथा गैर राजनैतिक संस्था है जो कि शिक्षा, सांस्कृतिक तथा खेल संबंधी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिये निरन्तर प्रयासरत है, भवन निर्माण तथा सभा द्वारा चलाई जा रही सभी गतिविधियां लोगों द्वारा दी जाने वाली अनुदान राशी से चलाई जा रही है सभा को दी जाने वाली अनुदान की राशी आयकर अधिनियम 1960 की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

8) सभा द्वारा समय–समय पर परीक्षार्थीओं की सुविधा के लिए प्रशासनिक व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए विशेषज्ञों द्वारा कोचिंग क्लासें चलाई जाती हैं।

जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा एक मासिक पत्रिका 'जाट लहर' की शुरुआत 10 फरवरी 2000 को बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर की गई जिसका प्रकाशन निरंतर जारी है। इस प्रकाशन में "वैवाहिक तथा रोज़गार" सम्बन्धी समाचार भी प्रकाशित किये जाते हैं । इस पत्रिका का मूल्य 5 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1100 रुपये है। आप सभी से अनुरोध है कि पत्रिका के आजीवन सदस्य बनकर पत्रिका को सुचारू रूप से प्रकाशित करने में सहयोग प्रदान करें।

मैं उन सभी महानुभावों को जाट सभा की कार्यकारिणी तथा सभी सदस्यों की ओर से धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने जाट सभा के कार्यक्रमों में अपना तन, मन, धन से सहयोग दिया है जिस से जाट सभा, चण्डीगढ़/पंचकूला के अब तक सभी कार्य भली भांति सम्पन्न हुए हैं। मैं भविष्य में भी उनके सहयोग के लिए सादर अनुरोध करता हूँ।

धन्यवाद

दीन बंधु सर छोटूराम

बी.एस.गिल, सचिव
जाटसभा, चण्डीगढ / पंचकूला

जननी जनै तो भगत जनै , या दाता या शूर।
नहीं तो जननी बांझ रहे, काहे गवाए नूर।।

दीन बंधु सर छोटूराम ने इसे भूमि को मां मानकर तथा किसान के शोषण के मद्देनजर कहा ''जिस खेत से मयस्सर ना हो दहकां की रोटी, उस खेत के गोसाए गंदम को जला दो''। दीन बंधु सर छोटूराम ऐसी ही प्रतिभा थे जो एक ही वक्त में भगत भी, शूर भी और दाता भी थे। खुद का जीवन कभी आसान ना था लेकिन बिना किसी जाति-पाति और धर्म के प्रतिभा पर सब न्यौछावर था। उनका जन्म एक मध्यम वर्गीय गढ़ी सांपला के चौधरी सुखीराम के घर 24 नवंबर 1881 को हुआ लेकिन कृषक समाज के मसीहा ने इसे किसान की इच्छाओं आकांक्षाओं से जोड़कर बसंत पंचमी के दिन मनाने का आह्वान किया। इस दिन सरसों की फसल के फूलों की तरह किसान का तन मन भी खिल उठता है। यही उनके किसान मजदूर वर्ग के प्रति गहरे लगाव को जाहिर करता है।

सर छोटू राम का सफर इतना आसान नहीं था। एक मध्यम किसान परिवार में जन्मे बच्चों के दिल में एक साहूकार से पिता को बे-इज्जत होते देख जो भावना पैदा हुई वह प्रतिशोध नहीं कुछ कर गुजरने की ललक थी। वह छोटा सा हादसा ही उनका पथ प्रदर्शक बन गया और काश्तकार-गरीब वर्ग मसीहा बनकर उबरे। अपनी कड़ी मेहनत और बुद्धि की बदौलत सैंट स्टीफन कालेज दिल्ली से स्नात्तक की डिग्री हासिल की। संपूर्ण विद्यार्थी जीवन स्नात्तक और कानून स्नात्तक तक की डिग्री सदा प्रथम श्रेणी में हासिल कर वजीफे पर ही पूर्ण की जो उनकी बौद्धिकता का प्रतीक और प्रमाणिक है।

सर छोटू राम ने देश को सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद जैसी कुरीतियों से निजात दिलाने के लिए और करोड़ों किसान, मजदरों को आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए वकालत का पेशा छोड़ राजनीति को अपना लिया। वे वर्ष 1916 में रोहतक जिले के कांग्रेस अध्यक्ष बने लेकिन केवल चार वर्षों बाद ही 1920 में कांग्रेस के असहयोग आंदोलन से अपना असहमति जताते हुए जिला कांग्रेस अध्यक्ष पद त्याग दिया।

वर्ष 1923 में सर फजल हुसैन के साथ मिलकर नेशनल युनिनिस्ट पार्टी का गठन किया। यह पार्टी किसान, मजदूर और काश्तकारों के हितों की रक्षा हेतु बनाई गई। यही उनका जीवन पर्यन्त ध्येय और लक्ष्य रहा। इसी वर्ष वे पंजाब विधान सभा का चुनाव जीतने पर कृषि मंत्री बने और 26 दिसंबर 1926 तक इसी पद की गरिमा को बढ़ाते हुए किसान हित के कई बिल पारित करवाए जैसा 'पंजाब कर्जा राहत अधिनियम 1934' इस अधिनियम का प्रावधान है कि अगर किसान ऋण दाता ने अपने ऋण से दोगुनी राशि अदा कर दी है तो ऋण स्वतः चूक जाता है। पंजाब कर्जदार सुरक्षा अधिनियम 1936 के अनुसार कर्जदार के वारिसों की भूमि हस्तांतरण पर रोक लगी तथा खड़ी फसल, वृक्षों को

बेचने व कुर्की करने पर रोक लग गई। पंजाब राजस्व अधिनियम 1928, पंजाब कर्जदाता पंजीकरण अधिनियम 1938 तथा रहनशुदा जमीनों की बहाली अधिनियम 1938 भी पारित करवाए। रहनशुदा जमीनी बिल का प्रावधान था कि 20 वर्ष पूर्ण होने पर किसान की भूमि स्वतः रहन मुक्त हो जाती थी। इन विधेयकों का प्रभावी क्रियान्वयन पीड़ित किसान वर्ग के लिए वरदान साबित हुआ। इनमें यह भी प्रावधान था कि किसान के मूलभूत कृषि यंत्र, साधन, बैल, हल इत्यादि की किसी भी हालत में कुर्की नहीं हो सकती थी।

आधुनिक भारत के विकास मंदिर के नाम से जाने वाले भाखड़ा बांध की रूप रेखा सर छोटू राम ने बना दी थी। वर्ष 1933 में पंजाब लैजिस्लेटिव कांऊसिल के प्रस्ताव के अनुसार इस परियोजना की काफी हद तक बाधाएं पार करवा दी तथा वे इसे मूर्त रूप देने में जीवन प्रयंत प्रयासरत रहे। कृषि जगत में हरित क्रांति का बीज अंकुरित करने के लिए लाहौर में एक दिन समारोह के दौरान उन्होंने अपना जन्मदिवस बंसत पंचमी को मनाने के लिए कहा था क्योंकि उनका मानना था कि बसंत पंचमी किसान-काश्तकार का पर्व है और प्रकृति व कृषक समाज युग-युगांतर से एक दूसरे के पर्यायवाची हैं।

सरकार के इशारे मात्र और थोड़े से सहारे के साथ किसान ने हरित क्रांति को फलीभूत कर दिया लेकिन उसके घर में लक्ष्मी (धन) या सरस्वती (शिक्षा) दोनों का ही अभाव है। आजादी के बाद विकास का जो माडल अपनाया गया उसकी सफलता और विफलता पर बौद्धिक बहस शुरू हो चुकी है। आज भारत की कुल आर्थिकता का 70 प्रतिशत करीब 48000 अरब रूपये की संपत्ति केवल 8200 बड़े अमीर घरानों के पास है और करीब 23 करोड़ की आबादी के पास केवल 30 प्रतिशत जो स्पष्ट करता है कि आर्थिक व्यवस्था चंद घरानों के पास गिरवी पड़ी है। एक रिपोर्ट के अनुसार एक दशक में 6 लाख करोड़ रूपये गैर कानूनी तरीके से बाहर भेजे गए और हर वर्ष 48 से 63 हजार करोड़ रूपये बाहर गए। सर छोटू राम ने किसान-मजदूर वर्ग को राहत देने के लिए कानून बनवाए थे लेकिन आज किसान पर रजिस्ट्री कानून 1882, भूमि अधिग्रहण कानून 1894 तथा भू-उपयोग वर्गीकरण कानून 1950 की भारी मार पड़ रही है।

सर छोटू राम हिंदू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। मुस्लिम लीग पंजाब में युनिनिस्ट पार्टी को खत्म करने के लिए प्रयास करती रही और देश विरोधी ताकतों को मजहब के नाम पर बांटने की कोशिश करती रही। वर्ष 1944 में उन्होंने मुस्लिम बहुल क्षेत्र लायलपुर अब फैसलाबाद में मुल्लाओं और डिप्टी कमीश्नर के विरोध के बावजूद एक बड़ी रैली करने में सफलता हासिल की। इस रैली में 50,000 के करीब लोगों ने हिस्सा लिया। सर छोटू राम उस वक्त तो इसे टाल गए लेकिन राष्ट्र विरोधी ताकतें एक अलग इस्लामिक देश - पाकिस्तान के गठन में कामयाब हो गई और राष्ट्र का विभाजन 1947 में हो गया। राष्ट्रभक्तों का मानना है कि अगर सर छोटू राम जिंदा रहता तो राष्ट्र का बंटवारा न होता। चौधरी साहब बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहते थे ''हम मौत पंसद करते हैं, विभाजन नहीं।'' वे मजहब के नाम पर बने इस इस्लामिक राज्य पाकिस्तान को बंगाल व पंजाब के हिदूंओं तथा सिक्खों के लिए अत्याचार का क्षेत्र समझते थे जिसका असली स्वरूप आज सारे राष्ट्र को नुकसान पहुंचा रहा है।

सर छोटू राम ने किसान के बेटे की शिक्षा के उपर विशेष बल दिया ताकि वह अपना जीवन सुधार सके और पढ़ लिखकर कहीं नौकरी कर घर की माली हालत सुधार सके। इसके साथ ही वे स्त्री शिक्षा के पक्षधर थे। उनका मानना था कि महिला शिक्षा व महिलाओं के आत्म सम्मान व सुरक्षा के

बिना कोई भी राष्ट्र तरक्की नहीं कर सकता लेकिन आज सब कुछ विपरीत हो रहा है। महिलाओं के विरूद्ध लगातार बढ़ रहे अत्याचारों व दुराचार की घटनाओं से समस्त महिला वर्ग की सुरक्षा दाव पर लगी है लेकिन नेतागण अपनी कुर्सी बनाए रखने में लगे हैं। उन्होंने जाट गजटीयर पत्रिका का प्रकाशन कर किसान मजदूर वर्ग के लिए शिक्षा का अभियान चलाया तथा शिक्षा के प्रसार के लिए गुरूकुल और जाट शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करवाई। उनसे सहायता प्राप्त शिक्षा प्राप्त करने वालों में भूतपूर्व केंद्रीय मंत्री चौ0 चांद राम और पाकिस्तान के एकमात्र नोबेल पुरष्कार विजेता अब्दुस सलाम उल्लेखनीय हैं।

नोबेल पुरष्कार जीतने पर अब्दुस सलाम ने कहा था कि ''अगर सर छोटूराम ना होते तो अब्दुस कलाम इस मुकाम पर ना होते।'' उनका मानना था कि किसान की दशा दिशा सुधारने में किसान के बच्चों के लिए शिक्षा के साथ-साथ रोजगार नितांत जरूरी था क्योंकि कृषि उस वक्त में लाभप्रद पेशा नहीं था। आज किसान के हालात बद से बदतर हो गए हैं। देश में किसान आत्म हत्याएं करने को मजबूर हैं। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 1997 से 2012 के अंत तक 4 लाख 67 हजार किसान आत्म हत्या कर चुके हैं। सरकार पूंजीपतियों की कठपुतली बनकर रह गई है। किसान की फसल का मूल्य लागत मूल्य से भी कम है क्योंकि उन्हे तय करने वालों को तो गेहूं के पौधे और वृक्ष में फर्क मालूम नहीं। कृषि सब्सिडी के नाम किसान पर ऋण का बोझ बढ़ता है और व्यापारी वर्ग ऐश करता है। छः माह खेत में खड़ी फसल और उस पर भी मौसम, कीट, कर्ज, मर्ज, गर्ज किसान को बदहाली की ओर ही बढ़ाती है। आज किसान का उत्पाद गेहूं 12 रूपये प्रति किलो खरीदकर, आटा 20 रूपये बेचा जा रहा है, गन्ने के औसतन उत्पादन की लागत 330 से 334 रूपये प्रति क्विंटल आती है जबकि गन्ने का भाव तामिलनाडू से उत्तराखंड तक विभिन्न राज्यों में 170 से 295 रूपये तक दिया जा रहा है परंतु चीनी 40 रूपये किलो मिलती है। आलू 26 पैसे की खरीद किसान से और उससे बने चिप्स 350 रूपये प्रति किलो के हिसाब से बिक रहे हैं। व्यापारी उद्योगपति मनमानी कीमत लिखता है और किसान अपने उत्पाद की कीमत के लिए किसी और की तरफ देखता है। उस पर भी उसकी पुश्तैनी कारोबार जुटाने वाली जमीन औने-पौने भाव खरीदकर सरकार उद्योगपतियों को दे रही है ताकि वे उस पर भी चांदी काट सकें। सरकार को नित घोटालों से फुरसत नहीं। अरबों-खरबों के घोटाले उजागर हो रहे हैं और अन्नदाता के हिस्से आ रही है भुखमरी, कर्ज का बोझ और आत्महत्या और केवल अभाव और अभाव। ग्रामीण क्षेत्र में विकास की लौ नहीं केवल उपभोक्ता वस्तुओं का प्रसार हो रहा है। वर्ष 2007 में 28 प्रतिशत नवजात शिशू भुखमरी और कुपोषण के शिकार हो गए। आज भी 50 प्रतिशत जनता के पास सुलभ शौचालय की व्यवस्था नहीं है। बिजली पानी के लिए हाथ पसार रहा है, खाद-बीज का अभाव है और इनकी कीमतें आसमान छू रही हैं।

आज किसान की अथक कोशिशों से पैदा अनाज के भंडारण की भी उचित व्यवस्था नहीं हो पा रही है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार आज तक केवल 415 लाख टन खाद्यान्न रखने की ही व्यवस्था है। करीब 190 लाख टन अनाज मात्र पत्रियों से ढ़का है। हर वर्ष 58 हजार करोड़ रूपये का अनाज, फल तथा सब्जियां बर्बाद होने की बात सरकार ने स्वंय मानी है जबकि गरीब भूख से मर रहा है और किसान विपरीत नीतियों की मार झेलते हुए आत्महत्या करने पर विवश हैं। अर्थशास्त्री सरकार के दबाव में अपनी ही नीतियों में उलझे नजर आते हैं। हाल ही में सुरक्षा विधेयक तो पारित हो गया। इसके

अनुसार देश की 63 प्रतिशत आबादी को सस्ते दाम पर अनाज उपलब्ध होगा यानि 3 रूपये किलो चावल, 2 रूपये किलो गेहूं तथा एक रूपये किलो मोटा अनाज दिया जाएगा यानि कि 27663 करोड़ रूपये अतिरिक्त सब्सिडी से कुल खाद्य सब्सिडी 95 हजार करोड़ रूपये हो जाएगी। गेहूं-चावल की समर्थन मूल्य से यह राशी और बढ़ेगी। क्या सरकार कर पाएगी? करदाता और पिसेगा और कालाधन और बढ़ेगा। लगता है मंहगाई के साथ कांग्रेस का पुराना नाता है। जब अमेरिका रसातल में गया हमारे बैंकों ने उद्योगपतियों तथा निर्यातकों को जबरदस्ती युरो ऋण दिए गए। उन्हे मंदी से उभार दिया लेकिन अब स्वंय भारत वर्ष किस दिशा-दशा को प्राप्त है, जग जाहिर है। डालर 25 वर्षों का सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर 53 रूपये का हो गया है। आज आका अमेरिका इनकी मदद को क्यों नहीं आ रहा? या हमने उनकी मदद करते वक्त क्यों नहीं सोचा? जिसका खामियाजा आज हम भुगत रहे हैं।

सर छोटूराम की चौमुखी प्रतिभा को हमें आज के संदर्भ में देखना-समझना है। जब तक उनकी विचारधारा युवा वर्ग में पूर्णतया जागृत नहीं होगी तब तक उनकी ग्रामीण क्रांति या महात्मा गांधी का पूर्ण स्वराज भारत में नहीं आ सकता।

आज संपूर्ण किसान-मजदूर वर्ग पुकार रहा है कि कृषक-मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, उसके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतिशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अखंडता व प्रभुसत्ता संपन्नता को कायम रखने के लिए फिर से एक दीन बंधु सर छोटूराम की आवश्यकता है ताकि उनका ग्रामीण समाज, किसान, कृषक-मजदूर वर्ग के विकास का स्वप्न साकार हो सके।

RANA & CO.

CHARTERED ACCOUNTANTS

Auditor's Report

We have examined the Balance Sheet of **JAT SABHA, CHANDIGARH** at & on 31st March 2015 and the Income and Expenditure Account for the year ended on that date which is in agreement with the books of account maintained by the said Sabha/Society/Trust.

We have obtained all information and explanations, which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purposes of our audit.

In our opinion proper books of account have been maintained by the above named Sabha/Society/Trust as appears from our examination of books of accounts at Chandigarh and all vouchers have been taken as correct as passed by the Management.

In our opinion and to the best of our information, and according to the explanations given to us the said statement of accounts give a true and fair view subject to below.

1. All vouchers of Assets and liabilities, Income and Expenditure have been taken as correct as passed by the Management.

(3) In the case of the Balance Sheet of the State of Affairs of the above named Sabha/Society/Trust as at 31st March, 2015 and

(4) In the case of the Income and Expenditure Account of the Excess of Income over Expenditure for its accounting year ending on 31st March 2015.

(CA. S.C. RANA)
Proprietor (M.No. 089857)
For RANA & Co. (F. R. No: 11121N)
Chartered Accountants

Place: Chandigarh
Date: 21-08-2015

Office : SCO No. 6, 2nd Floor, Sector-27-D, Chandigarh-160019.
Phone : 0172-5025588 **Mobile :** 9815398605 **E-mail:** ranaco@sify.com

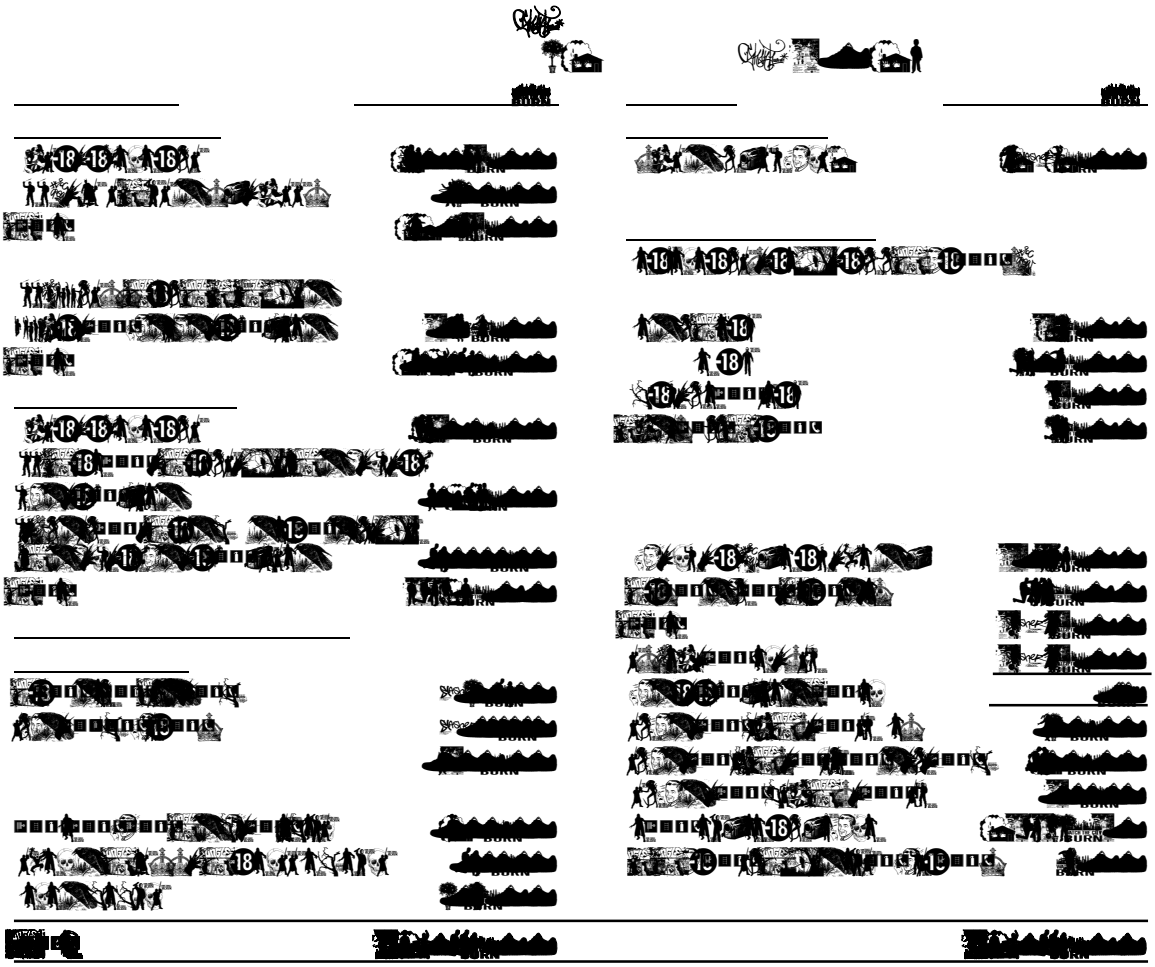

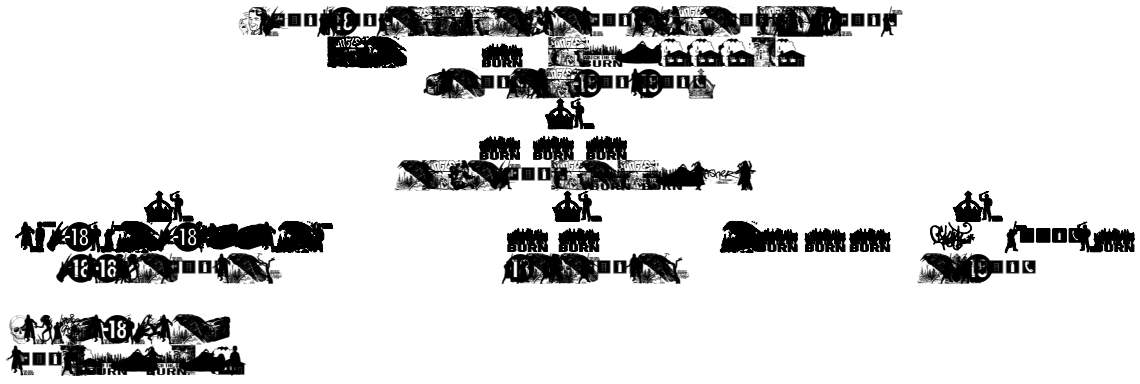

[redacted]

[redacted]	[redacted]
[redacted]	[redacted]
[redacted]	[redacted]
[redacted]	[redacted]

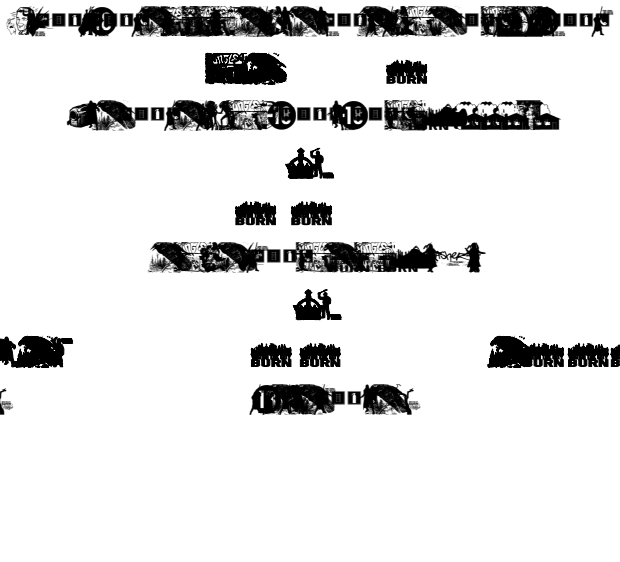

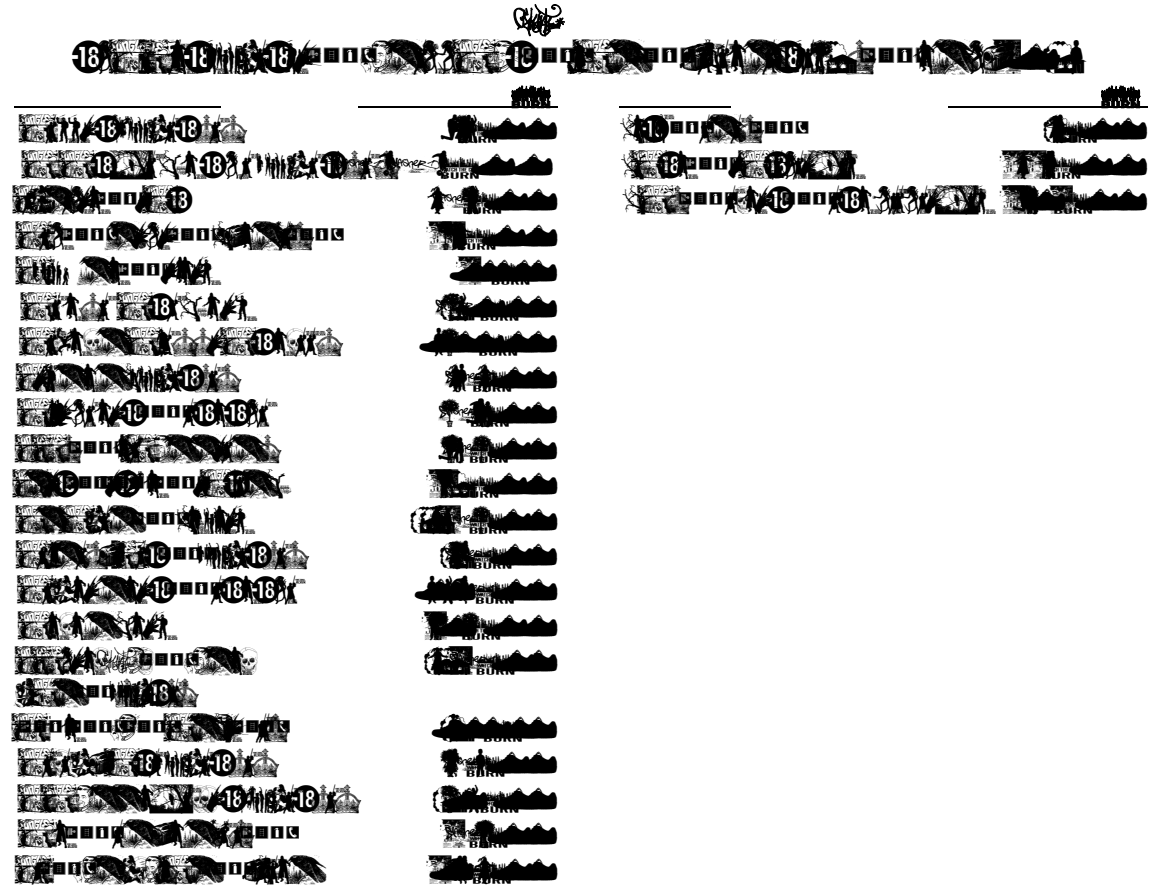

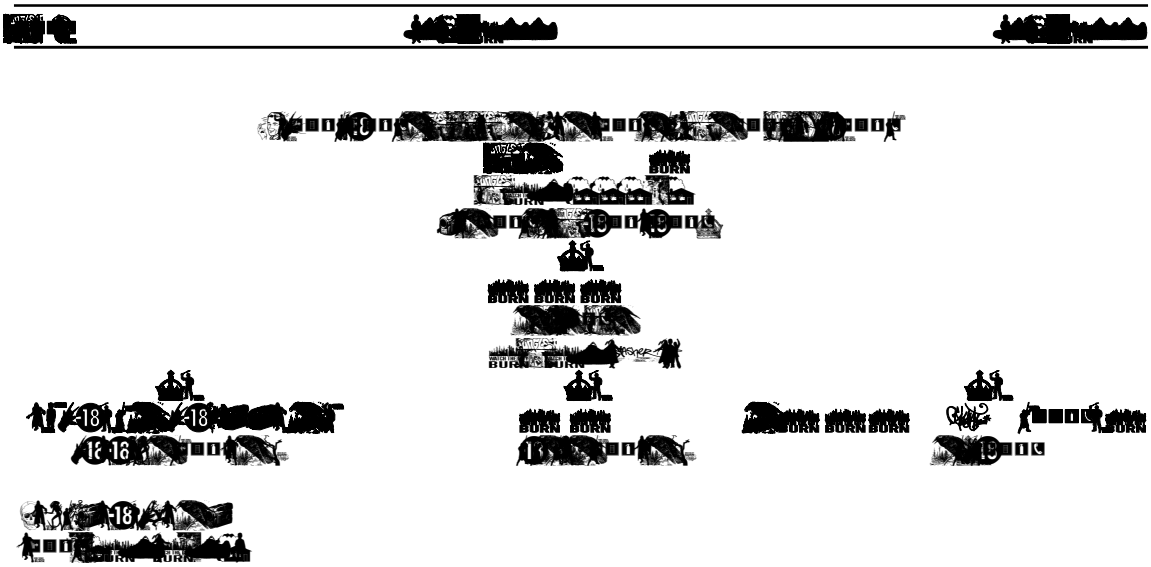

BHAI SURENDER SINGH MEMORIAL
ALL INDIA ESSAY WRITING COMPETITION

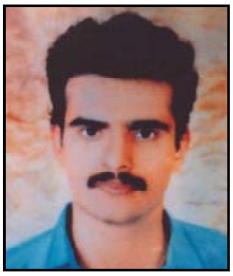

Jat Sabha, Chandigarh has been organising **'Bhai Surender Singh Malik Memorial All India on the Spot Essay Writing Competition'** for the college and University students every year. This competition is dedicated to the students in the sweet and everlasting memory of late Sh. Surinder Singh Malik, Electronic Engineering, who met with a Fatal car accident in the prime of his life (23 years) on June 5, 1993 and succumbed to the injuries on July 19, 1993. Rani of Jhansi died at the age of 23. Alexender the great died at the age of 23, Florence Nightingale died at the age of 23 and Shefali Chaudhary too died at the age of 23. We are thus reminded of the sad saying "Those whom God loves, die young.

During his short of life, he had held high principles and moral values and the award is to envisage his high principles of life. The award will only go to the deserving and meritorious students whose essays are evaluated best by the judges. To keep his memory alive and to develop faith and trust in the younger generation, this competition is being held every year. Inspite of all the odds an effort has been made to show his silver lining in the beack clouds to the students so that they develop a belief in themselves by winning the award. The competition is financed by Bhai Surender Singh Malik Institute of Medical Science and Educational Research, Nidani, District Jind, Haryana. This prestigious competition carries the following prizes for urban and Rural categories.

Urban Category :-

First Prize	–	Gold Medal and Rs. 5100/- in cash
Second Prize	–	Silver Medal and Rs. 3100/- in cash
Third Prize	–	Bronze Medal and Rs. 2100/- in cash
Consolation Prizes	–	Prize of Rs. 1500/-, Rs. 1000/- Rs. 900/- and Rs. 600-600/-

Rural Category :-

First Prize	–	Gold Medal and Rs. 5100/- in cash
Second Prize	–	Silver Medal and Rs. 3100/- in cash
Third Prize	–	Bronze Medal and Rs. 2100/- in cash
Consolation Prizes	–	Prize of Rs. 1500/-, Rs. 1000/- Rs. 900/- and Rs. 600-600/-

Dr. M.S. Malik, IPS, (Retd.) President, Jat Sabha, Chandigarh/Panchkula, Haryana declared the topics of essay offering choice to the participants, which was as under :

हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी में स्वास्थ्य और उसका महत्त्व । या

आज के विश्व में क्या महिलाएं वास्तव में सशक्त एवं सुरक्षित है ? या

भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ना एक कठिन कार्य है ।

Essay contest was organished on 04.07.2015 at follwing centres :-

1. Ch. Bharat Singh Memorial Sports School Nidani, Distt. Jind (Haryana)
2. Bhai Surender Singh Malik Memorial Girls Sr. Secondary School, Nidani
3. Govt. Girls Sr. Secondary School, Shamlo-kalan, Distt. Jind (Haryana)
4. Govt. Girls Senior Secondary School Lajwana-kalan, Distt. Jind
5. Govt. Senior Secondary School Gatoli, Distt. Jind
6. Govt. Girls Senior Secondary School, Julana, Distt. Jind (Haryana)
7. Govt. Senior Secondary School, Julana, Distt. Jind.
8. Govt. Senior Secondary School, Kilazaffar Garh, Distt. Jind
9. Gyandeep Model High School Sector 18, Panchkula
10. Bhavan Vidyalaya, Near Market, Sector 15, Panchkula
11. C.L. D.A.V. Sr. Secondary School, Sector-11, Panchkula
12. Moti Ram Sr. Secondary School, Sector-27, Chandigarh

WINNERS OF BHAI SURINDER SINGH MALIK MEMORIAL ALL INDIA ESSAY WRITING COMPETITION HELD ON 04.07.2015

S.No	Name	Class & Institution	Prize
Rural Area			
1.	Mr. Vikram S/o Sh. Ramesh Kumar	Class, 10+2 Ch. Bharat Singh Mem. Sr. Sec., Nidani (Jind)	Gold Medal & Rs. 5100.00
2.	Ms. Preeti D/o Sh. Anand	Class, 10th B.S.S. M.M. Sr. Sec. School, Nidani (Jind)	Silver Medal & Rs. 3100.00
3.	Ms. Seema D/o Sh. Satwan	Class, 10+2-B G.G. S.S. S. Lajwana-Kalana, Distt. Jind	Bronze Medal & Rs. 2100.00
4.	Mr. Asis S/o Sh. Vijay Pal	Class, 10th C.B.S.M. S.S.S. Nidani, Distt. Jind.	1st Consolation Rs. 1500.00
5.	Ms. Nisha D/o Sh. Ranbir Singh	Class, 10+1-A G.S.S.S. Kilazaffargarh Distt, Jind	2nd Consolation Rs. 1000.00
6.	Ms. Ritu Malik D/o Sh. Om Parkash	Class, 10+ G.G.S.S.S. Shamlo-kalan, Distt, Jind	3rd Consolation Rs. 900.00
7.	Ms. Joti D/o Sh. Ram Niwas	Class10+2 G.S.S.S, Gatoli, Distt. Jind.	4th Consolation Rs. 600.00
8.	Mr. Ankit S/o Sh. Mukhtyar Singh	Class, 10th C.B.S.S.S.M, Nidani, Distt. Jind	5th Consolation Rs. 600.00
9.	Mr. Savita D/o Sh. Mahavir Singh	Class, 10th G.G.S.S.S, Lajwana-kalan, Distt. Jind	6th Consolation Rs. 600.00
10.	Ms. Pooja D/o Sh. Sumer Singh	Class, 10+2 G.S.S.S, Kilazaffargarh, Distt. Jind	7th Consolation Rs. 600.00
11.	Ms. Seema D/o Sh. Anil Kumar	Class, 10+1 G.G.S.S.S, Shamlo-kalan, Distt. Jind	8th Consolation Rs. 600.00
12.	Ms. Diksha D/o Sh. Satyavan Singh	Class, 10+1 G.S.S.S, Gatoli, Distt. Jind	9th Consolation Rs. 600.00

Urban Area

1.	Ms. Nisha D/o Sh. Satish Kumar	Class 10+2-D G.G.S.S.S, Julana, Distt. Jind	Gold Medal & Rs. 5100.00
2.	Ms. Anjali D/o. Sh. Tek Ram	Class 10+1 G.S.S.S, Julana, Distt. Jind	Silver Medal & Rs. 3100.00
3.	Ms. Avni Garg D/o Sh. Tribhuwan Garg	Class 10+1 Bhawan Vidyalya Sector 15, Panchkula.	Bronze Medal & Rs. 2100.00
4.	Ms. Geeta D/o Sh. Bijender Lather	Class 10th G.G.S.S.S, Julana, Distt, Jind.	1st Consolation & Rs. 1500.00
5.	Ms. Himanshi D/o Dr. Sarwan Sharma	Class 10th A Moti Ram Arya School, Sec, 27, Chandigarh.	2nd Consolation & Rs. 1000.00
6.	Ms.Ayushi D/o Sh. Amit Srivastva	Class. 10th CLDAV Public School Sector 11, Panchkula	3rd Consolation & Rs. 900.00
7.	Mr. Shivan Tiwari S/o Sh. Tankeshwar Tiwari	Class 10th Gyandeep School Sector 18, Panchkula	4th Consolation & Rs. 600.00
8.	Ms. Seema D/o Sh. S.H. Birbhan	Class 10+2 G.G.S.S.S, School Julana, Distt. Jind	5th Consolation & Rs. 600.00
9.	Ms. Priyanka D/o Sh. Kaptan Singh	Class 10+2 G.S.S. School Julana, Distt. Jind	6th Consolation & Rs. 600.00
10.	Ms. Mayank Siwach D/o Col. Balbir Siwach	Class 10+1 (Com.) Bhavan Vidyalaya Sector 15, Panchkula.	7th Consolation & Rs. 600.00
11.	Ms. Ruchika Hooda D/o Sh. Raj Kumar Hooda	Class 10th B Moti Ram Arya S. S. S. Sec. 27, Chandifgarh.	8th Consolation & Rs. 600.00
12.	Ms. Anju Kumari D/o Sh. Rohtash Kumar	Class 10+1 G.G.S.S.S, Julana, Distt. Jind.	9th Consolation & Rs. 600.00

WINNERS OF POSTER MAKING COMPETITION ON "USES AND ABUSES OF INTERNET" HELD ON 24TH NOVEMBER, 2015 AT JAT BHAWAN, 2-B, SECTOR 27-A CHANDIGARH.

Category-A (Class III to V)

1st Prize Ramnik Singh Dahiya, Class 5th B, Saint Vivekanand Millennium School, HMT Pinjore.

2nd Prize Junedh, Class 5th B, Govt. High School, Sector-32-D, Chandigarh.

3rd Prize Usha Kiran, Class 5th A, Mount Carmel School Sector-47 B, Chandigarh.

Consolation Prize:

Shalini, Class 3rd B, Gyandeep Senior Sec. School, Sector 20, Panchkula.

Veshali, Class 5th A, Gyandeep Public School, Sector 18, Chandigarh

Category -B, (Class VI to VIII)

1st Prize: Anup, Class 7th, Govt. High School, Sector-32, Chandigarh.

2nd Prize: Monika, Class 8th, Govt. Senior Secondary School, Sector 28-D, Chandigarh.

3rd Prize: Amit, Class 6th E, Govt. High School, Ramdarbar, Chandigarh.

Consolation Prize:

Ridhi Verma, Class 8th B, Saint Vivekanand Millennium School, HMT Pinjore.

Pardeep, Class 8th, Gyandeep Senior Sec. School, Sector 20, Panchkula

Category -C, (Class IX to XII)

1st Prize: Sagar, Class 9th, Govt. High School, Ramdarbar, Chandigarh.

2nd Prize: Rupali, Class 9th A, St. Vivekanand Millennium School, HMT Pinjore.

3rd Prize: Rohit, Class 9th B, Govt. Senior Sec. School, Sector 32, Chandigarh.

Consolation Prize:

Tripati, Class 10th, Mount Carmel School Sector-47 B, Chandigarh.

Sarita, Class 10th, Gyandeep Public School, Sector 18, Panchkula

AWARDS TO MERITORIOUS STUDENTS FOR THE YEAR 2015

1 Name **SUMIT SANGWAN**
Father's Name Sh. Mahabir Singh Sangwan
Date of Birth
Native Place: VPO: Mehra, Distt. Bhiwani.
Local Address # G-120, HMT Township, Pinjore. Distt. Panchkula
Achievement Passed All India Senior School Certificate Examination, 2015 conducted by Central Board of Secondary Education New Delhi from Mount Carmel School, Sector 47, Chandigarh with 93.2% marks.

2 Name **ROHIT DALAL**
Father's Name Sh. Dilbag Singh Dalal
Date of Birth
Native Place: Village, Asoda, Distt. Jhajjar (Haryana)
Local Address # G-121, HMT Colony, Pinjore. Distt. Panchkula.
Achievement Passed All India Secondary School Certificate Examination, 2014-15 conducted by Central Board of Secondary Education, Delhi from Govt. Model Senior Secondary School, Sector 16, Chandigarh with 90.6% marks.

3. Name **PREET SINGH GILL**
Father's Name Sh. Rakesh Gill
Date of Birth
Native Place: VPO: Kharainti, Distt. Rohtk (Haryana)
Local address: # 834, Sector 25, Panchkula.
Achievement Passed All India Senior School Certificate Examination 2014-15 conducted by Central Board of Secondary Education Delhi from Satluj Public School Sector 4, Panchkula with 90.8% marks.

4. Name **AJAY KUMAR**
Father's Name Sh. Satpal Jhajharia
Date of Birth
Native Place: VPO: Mahjat, Distt. Hisar (Haryana)
Local address: # C-30, HMT Township, Pinjore, Distt. Panchkula.
Achievement Passed All India Senior School Certificate Examination 2014-15 conducted by Central Board of Secondary Education Delhi from Govt. Model

Senior Secondary School Sector 16, Chandigarh with 88.4% marks.

5. Name **ASHISH RATHEE**
Father's Name Sh. Anil Kumar Rathee
Date of Birth 07.02. 1999
Native Place: VPO: Sankhol, Distt. Jhajjar (Haryana)
Local address: #
Achievement Passed Indian Certificate of Secondary Education Examination (Class-X) year-2015 conducted by Council For the Indian School Certificate Examinations, New Delhi from Little Flower Convent School, Panchkula with 89.3% marks.

6. Name **ESHVITA BHADOO**
Father's Name Dr. Vivek Bhadoo
Date of Birth 23. 11. 1998
Native Place: VPO:
Local address: # 1, Govt. Civil Hospital, Sector 6, Pkl
Achievement Passed Indian Certificate of Secondary Education Examination (Class-X) year-2015 conducted by Council For the Indian School Certificate Examinations, New Delhi from Little Flower Convent School, Panchkula with GPA, A Grade.

Participated in 61st National School Games 2015-16 Basket Girls Under 19 from 02nd Jan. to 09th Jan, 2016 conducted by School Games Federation of India.
Participated in 60st National School Games 2014-15 Basket Girls Under 17 from 04th Jan. to 08th Jan, 2015 conducted by School Games Federation of India.

7. Name **MUSKAN KODAN**
Father's Name Sh. Ravinder Kumar
Date of Birth 24. 12. 1998
Native Place: VPO: Hasaan Pur, Distt. Jhajjar (Haryana)
Local address: # 752, Sector 21, Panchkula.
Achievement Passed Indian Certificate of Secondary Education Examination (Class-X) year-2015 conducted by Council For the Indian School Certificate Examinations, New Delhi from Little Flower Convent School, Panchkula with 92.83% marks.

8. Name **VISHESH DHANKHAR**
Father's Name Sh. Vijender Singh Dhankhar
Date of Birth 11.11.1999
Native Place: VPO: Nayabass, Distt. Sonepat (Haryana)
Local address: # 1890, Sector 26, Panchkula.
Achievement Passed Indian Certificate of Secondary Education Examination (Class-X) year-2015 conducted by Council For the Indian School Certificate Examinations, New Delhi from Little Flower Convent School, Panchkula with 87.8% marks

8. Name **RANVIR PUNIA**
Father's Name Sh. Virender Singh Punia
Date of Birth 14.11.2006
Native Place: VPO: Bichpari, Distt. Sonepat (Haryana)
Local address: # 507, Sector 21, Panchkula.
Achievement Ranvir Punia s/o sh. Virender Singh Punia, grandson of Sh. Jai Pal Singh Punia, HFS, Divisional Forest Officer (RTd.) of class 4th of "The Skyworld School" Sector 21, Panchkula bagged 4th International Rank and 1st State Rank in Cyber Olympics held by S.O.F (Science Olympiad Foundation). This exam was conducted among 22 Countries in the world.

AWARDS TO OUTSTANDING SPORTSPERSONS 2015

1. Name: **SARITA MOR**
Father's Name: Sh. Ram Chander Mor
Present Address: VPO: Baroda, Distt. Sonepat (Haryana)
Achievements:

Secured Gold Medal in International Wrestling Championship Kazakisthan-2015.
Secured Silver Medal in Asian Junior Wrestling Championship Mangoliya 2015.
Secured Gold Medal in Senior National Wrestling Championship Delhi from 26th to 31st December,15
Secured Gold Medal in National Games Wrestling Kerala.
Participated in Senior World Wrestling Championship, Junior Wrestling Championship, Asian Cadet Wrestling Championship, Pro. Wrestling Championship.

2. Name: **KIRAN MATHUR**
Father's Name: Sh. Bhup Singh
Present Address: VPO: Kakana, Distt. Sonepat (Haryana)
Achievements:

Secured Silver Medal in Asian Sub Junior Wrestling Championship (Delhi) from 10 to 14th June, 2015.
Secured Gold Medal in National Sub Junior Wrestling Championship, Guwahati from 21st to 25th January, 2016.

3. Name: **ANJU DUHAN**
Father's Name: Sh. Naresh Kumar
Present Address: VPO: Chulania, Distt. Rohtak (Haryana)
Achievements:

Secured Bronze Medal in Asian Sub Junior Wrestling Championship (Delhi) from 10 to 14th June, 2015.
Secured Bronze Medal in National Sub Junior Wrestling Championship, Guwahati from 21st to 25th January, 2016.

4. Name: **HARDEEP DHILLON**
Father's Name: Sh. Dilbag Singh
Present Address: VPO: Dahola, Distt. Jind (Haryana)
Achievements:

Secured Gold Medal in Commonwealth Wrestling Championship F/S
Secured Silver Medal in Commonwealth Wrestling Championship, G/R.
Secured Gold Medal in Senior National Wrestling Championship, 2014-15 & 2015-16 Delhi from 26th to 31st December, 2015.
Secured Gold Medal in National Wrestling Games G/R.
Secured 1st position in Senior National Championship 2015 at Delhi.
Secured 1st position in National Games (Kerala) 2015.
Participated in Senior World Wrestling Championship-2015 at Las Vegas.

5. Name: **YASHASHWINI SINGH DESWAL**

Father's Name: Sh. S. S. Deswal, IPS
Present Address: VPO: Anta, Distt. Panipat
Achievements: Participated in ISSF World Cup Shooting Championship in Gabala, Azerbaijan in August, 2015.
Secured Junior Title with a New Junior National Record of 384 in Women's 10 M Pistol in 58th National Shooting Championship held in Pune in January, 2015.
She led the India Junior Shooting Team to a Bronze Medal in the Junior World Cup held in Suhl (Germany).

6. Name: **RANDEEP JAKHAR**

Father's Name: Sh. Sohan Singh Jakhar
Date of Birth: 10. 09. 1989.
Present Address: # 101, Bank Colony, Mani-majra (U.T.)
Achievements: Participated in 24th Chandigarh State Karate Championship held at The Banyan Tree School Sector 48-B, Chandigarh from 29th to 30th June, 2015 organized by Amateur Karate Association of Chandigarh (Regd.), secured Second position and won Silver Medal in below 70 kg weight Category in the Championship.

7. Name: **SWASTIK LOHCHAB**

Father's Name: Sh. Yogesh Kumar
Present Address: # Flat No. G-62, GHS-94, Sector 20, Panchkula.
Achievements: Participated in Ryan Minithon 2015-16 organized by Ryan International Sports Club Chandigarh and secured First position under group 12 (Boys) performance.

Members of Jat Sabha Chandigarh/Panchkula, retired from Service in the Year 2015 and Honoured on the Eve of Basant Panchami & 135th Birth Anniversary of Deen Bandhu Sir Chhotu Ram on 12th February, 2016

1. Dr. V. P. Ahlawat, Senior Scientist, CCSHAU, Hisar.
2. Sh. J. S. Dhillon, Manager (PPC & TI) HMT, Pinjore.
3. Sh. Ajit Singh Gill, Ayurvedic Department, Chandigarh Administration
4. Sh. Ram Phool Nara, HMT, Pinjore.
5. Sh. Phool Kanwar Sheoran, HMT, Pinjore.
6. Sh. Ved Parkash Kadian, HMT, Pinjore.
7. Sh. Vijay Singh Dahiya HMT, Pinjore.
8. Sh. Bhagat Singh Mor HMT, Pinjore.
9. Sh. Mahavir Singh Tanwa HMT, Pinjore.
10. Sh. Dharamvir Singh Dahiya HMT, Pinjore.
11. Sh. Dharam Paul Brala HMT, Pinjore.
12. Sh. Umed Singh Kataria HMT, Pinjore

चौ. छोटूराम का कृतित्व

राजवन्ती मान

1947 में अगर चौ.छोटू राम जिंदा होते तो कभी भी भारत-पाकिस्तान का बंटवारा न होता। गांधी जी के असहयोग आंदोलन से जहां जनमानस धीरे-धीरे सजग हो रहा था, वहीं क्रातिकारियों के धमाकों और अत्याचारी अंग्रेजों की सजा-ए-मौत की कार्यवाही तीव्रता से जागृति ला रही थी। लोग केवल आजादी की बात सोचने लगे थे।

अंग्रेजों ने इस देश की नब्ज को पहचान लिया था और वे फूट डालो, राज करो की कूटनीति में सफल भी थे। जब राष्ट्रीय एकता एवं देश की आजादी की हवा तेज हुई तो अंग्रेज कलेक्टर अथवा राज्यों के गवर्नर नमाज, आरती, ईद आदि के नाम पर किराए के आदमियों की सहायता से हिन्दू- मुसलमानों को भिड़ाकर स्वयं सुरक्षित होने लगे। अंग्रेजों की इस नीति के कारण अति महत्वाकांक्षी, किन्तु महत्वहीन और कमजोर कई राहू-केतु भारत के भाग्य के ग्रहण बनकर उभरने लगे। अंग्रेजों की कूटनीति और कांग्रेस की समझौतावादी नीति के कारण निकृष्ट लोग महिमामंडित होकर शक्तिशाली बनते गए और अंततः देश का दुःखद विभाजन हुआ और विभाजन के समय हुआ भयंकर खून-खराबा और आत्मा तक हिला देने वाले कृत्य।

संयुक्त पंजाब में एक अभिनव सफल प्रयोग किसान मसीहा चौधरी छोटू राम ने किया था। एकआर्य समाजी, आस्तिक संस्कारों के व्यक्ति होते हुए भी उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता, असाम्प्रदायिकता को अपने सिद्धांतों और व्यवहार में समाहित करके सच्चे राष्ट्रीय एकतावादी (यूनियनिस्ट) होने का प्रमाण दिया था। उन्होंने शोषणविहीन, किसान वर्ग का सपना देखा था, जहां जाति, धर्म, संप्रदाय, ऊंच-नीच, छुआछूत आदि सामाजिक कुरीतियां गौण थीं। उनका कथन था खून पानी से गाढ़ा होता है। एक शक्तिशाली वाक्य बनकर संपूर्ण जाति और किसान वर्ग को भाईबंदी के स्नेह से जोड़ता था। उन्होंने इस शोषित, अशिक्षित और पिछड़े वर्ग के लिए सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक स्तर पर बड़ी मुस्तैदी से व्यावहारिक ढंग से संघर्ष किया।

आजादी से पूर्व पंजाब वर्तमान हरियाणा, पंजाब, हिमाचल और पाकिस्तानी पंजाब को मिलाकर बहुत बड़ा राज्य था। उसमें हिन्दू, मुस्लिम और सिखों की आजादी बहुसंख्यक थी। पहले हिन्दू- मुसलमानों प्रत्येक समस्या का हल धर्म के चश्मे से देखकर करते थे, जिसके कारण उनके सोचने और निर्णय लेने का तरीका भी बिल्कुल सांप्रदायिक आधार पर होता था। चौ.छोटू राम ने इस दृष्टि को बदलकर ही रख दिया। उन्होंने 1923 ई. में जमींदार पार्टी (किसान पार्टी) की स्थापना करके पंजाब में चुनाव भी लड़ा। उन्होंने किसानों को क्रांतिकारी ढंग से सोचना सिखाया। वे किसानों की आर्थिक मजबूती पर अधिक जोर देते थे। इसलिए उन्होंने किसानों को सामूहिक राजनैतिक संघर्षों से अलग रखा। देश की आजादी से पूर्व वे किसान पुत्रों को शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक रूप से सुदृढ़ करना चाहते थे, ताकि आजादी का सही मायने में लाभ उठा सकें और स्वतंत्र भारत का नेतृत्व संभाल सकें।

चौ.छोटू राम अंग्रेजों का उतना ही साथ देते थे, जितना उनसे किसानों के हक में ले सकते थे। वे सच्चे देशभक्त, अपनी जाति पर गौरव करने वाले, समाजसेवक और अपने वर्ग को उच्चतम शिखर तक ले जाने की लालसा रखने वाले महापुरुष थे। उन्होंने कौंसिल में स्पष्ट शब्दों में स्वामी दयानंद के शब्दों को दोहराया था विदेशी राज्य चाहे जितना अच्छा हो, किन्तु वह अपने राज्य का स्थान नहीं ले सकता।

मुस्लिम लीग और जिन्ना का बढ़ता कद : कांग्रेस और अंग्रेजों ने मुस्लिम लीग की तरक्की में समान भूमिका निभाई थी। अंग्रेज तो लीग को अपने स्वार्थ में शतरंज के मोहरे की तरह प्रयोग हर रहे थे और कांग्रेस अपनी तुष्टीकरण को

कमजोर नीति के कारण मुस्लिम लीग के समक्ष घुटने टेक कर सौदा कर लेती थी, जिसके कारण एक अदना सा सांप्रदायिक संगठन राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावशाली संगठन दिखने लगा था। यदि लीग का कहीं प्रभाव नहीं होता तो केवल चौ.छोटू राम के पंजाब में, जहां तक प्रधानमंत्री भी एक मुस्लिम ही था। यूनियनिस्ट पार्टी में मुसलमान विधायकों की संख्या अधिक होने पर भी प्रायः सभी में चौधरी छोटू राम ने राष्ट्रीय एकता की भावना भर दी। एक बार चाय पार्टी में एक मुस्लिम युवक ने उस समय की सरकार को मुस्लिम लीग की सरकार कहा तो सर सिकन्दर ने उस नौजवान को डांटा और कहा कि हमारी सरकार यूनियनिस्ट सरकार है, मुस्लिम लीग की कतई नहीं। जो लोग इस भ्रम में हैं उन्हें अपना दिमाग साफ कर लेना चाहिए।

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात देश को बुद्धिजीवियों को उम्मीद जगी थी कि अंग्रेज अब अपने देश चले जाएंगे और हमारा देश आजाद होगा। इस समय दो प्रकार की प्रवृतियां काम कर रही थीं- सृजनात्मक और विध्वंसक प्रवृति के।

महात्मा गांधी के कारण चौ.छोटूराम ने पंजाब में जमींदारा यानि किसानों की राष्ट्रीय यूनियनिस्ट पार्टी बनाई। दूसरी और जिन्ना को अपनी महत्वाकांक्षाएं कांग्रेस के माध्यम से पूर्ण होने के आसार नहीं दिखे तो वह मुस्लिम लीग के संस्थापक बन गए। पहले उन्होंने मुस्लिम शक्ति को अलग से उभारने का प्रयास किया और कांग्रेस से अलग अस्तित्व स्थापित कर लिया। धीरे-धीरे वे स्पष्ट कहने लगे कि भारत में दो राष्ट्र हैं, उनकी अलग-अलग संस्कृति है। इसी आधार पर उन्होंने पाकिस्तान की मांग की। मुस्लिम लीग ने धीरे-धीरे सारे देश में प्रभाव पैदा कर लिया। केवल पंजाब और कश्मीर ही एकमात्र ऐसे राज्य थे जहां उसका प्रभाव न के बराबर था। इसका मुख्य कारण था- चौधरी छोटू राम की तीक्ष्ण एवं दूरदृष्टि जबकि पंजाब में मुस्लिम आबादी बहुसंख्यक थी।

चौ.छोटूराम और मोहम्मद अली जिन्ना की वैचारिक भिन्नता

चौ.छोटू राम और मोहम्मद अली जिन्ना भारतीय राजनीति के दो ऐसे कट्टर सितारे थे, जिन्हें अनेकों बार एक साथ बैठाने का प्रयास किया गया, किन्तु वैचारिक विभिन्नता के कारण नदी के दो किनारों की भांति वे कभी एक न हो सके। जिन्ना जहां अलगवादी, सांप्रदायिक और अलग मुस्लिम राष्ट्र (पाकिस्तान) के प्रवर्तक थे, वहीं चौ.छोटू राम अखंड राष्ट्रवादी और धर्मनिरपेक्ष, ग्रामीण किसान- मजदूर वर्ग के प्रबल समर्थक थे। दोनों ही अपनी इस मूलभूत विचारधारा के कट्टर अनुयायी थे। जिन्ना अंग्रेजों के साथ मिलकर और कांग्रेस को ब्लैकमेल करके अलग राष्ट्र के लिए प्रयत्नशील थे, तो चौ.छोटूराम इस राष्ट्र-विरोधी और किसान विरोधी धारा के समक्ष चट्टान के समान प्रवाह को रोकने में किसी हद तक सफल रहे थे। यही कारण है कि अनेक बार जिन्ना के साथ उनकी झड़पें हुई मेल-मुलाकात हुई, किन्तु एकमत कभी नहीं हुए।

पंजाब में मुसलमानों की बहुसंख्यक आबादी के होते हुए भी जिन्ना पूरे देश में यहीं असफल हुए थे। उन्हें इसका बहुत अफसोस भी था। उन्होंने अनेक प्रयास किए कि कैसे भी पंजाब में मुस्लिम लीग का प्रभाव बढ़े और उसका शासन कायम हो। जिन्ना ने सैयद अहमद के उत्तराधिकारी के रूप में सर्वप्रथम कांग्रेस से धीरे-धीरे मुसलमानों को अलग करके मुस्लिम लीग के रूप में अलग पहचान दी। अंग्रेजों के सहारे मुसलमानों के हितों को पूरा करते-करते जिन्ना अलग राष्ट्र की मांग करने लगे।

सन् 1923 में स्टेट कौंसिल के लिए चुनाव हुए। चौ.छोटू राम झज्जर सोनीपत क्षेत्र से और चौ. लालचंद रोहतक से चुना जीतकर एम.एल.सी. चुने गए थे। विधानसभा में फजल-ए-हुसैन के साथ मिलकर नए राजनैतिक दल नेशनल यूनियनिस्ट पार्टी की स्थापना ग्रामीण कृषक हितों को आधार रखकर की गई थी। पार्टी का मुख्य उद्देश्य आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों और इलाकों की तरक्की, धर्म एवं जाति निरपेक्ष रहकर करना था। अपने निजहितैषी कार्यक्रमों के कारण पार्टी शीघ्र पूरे पंजाब में लोकप्रिय एवं प्रभावी हो गई। पार्टी हिन्दु- मुस्लिम एकता

की प्रतीक बन गई। पार्टी में 45 सदस्य थे, इनमें 35 मुसलमान थे। सर फजले हुसैन पंजाब के मुख्यमंत्री बने और चौ.लालचंद उनके सहायक मंत्री बने। 1924 में चौ.छोटू राम कृषि मंत्री बने।

जिन्ना 1936से ही पंजाब में अपनी पैठ बनाकर सारे देश में मुसलमानों के एकमात्र नेता होने का दावा करना चाहते थे। सर्वप्रथम जिन्ना ने सर फजले-हुसैन को मुस्लिम लीग का अध्यक्ष बनाने का प्रलोभन देकर तोड़ने का प्रयास किया।

जिन्ना ने पंजाब की यात्रा भी की, किन्तु राष्ट्रवादी एवं किसानों के हितैषी फजले-हुसैन ने जिन्ना का साथ देने से साफ इंकार कर दिया। इसी दौरान जिन्ना ने चौ.छोटूराम से भी मुलाकात की और उन्हें पंजाब से निराश होकर लौटना पड़ा। इसके बाद भी मुस्लिम लीग ने पंजाब में चुनाव लड़ा और केवल दो सीट ही जीत पाई। उसमें से भी एक सदस्य यूनियनिस्ट पार्टी में शामिल हो गया।

जिन्ना की नजर 1936से पंजाब के मुस्लिम एम.एल.सी. (विधायकों) पर थी। उनका विचार था कि यदि पंजाब का मुसलमान लीग के नेतृत्व को स्वीकार कर ले तो फिर सरकार ही मुस्लिम लीग की कहलाएगी। इसके लिए जिन्ना ने फजले-हुसैन के साथ -साथ सभी मुस्लिम एम.एल.सी. से व्यक्तिगत संपर्क करके प्रभावित करने का प्रयास किया था, किन्तु सर फजले-हुसैन और चौ.छोटू राम जैसे राष्ट्रवादी संकल्पशील व्यक्तियों के समक्ष उन्हें मुहं की खानी पड़ी।

सर फजले-हुसैन के इंतकाल 9 जुलाई, 1936के बाद 1937 में सिकन्दर- हयात यूनियनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष और प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। चुनाव में 175 के सदन में यूनियनिस्ट पार्टी के 101 सदस्य जीते थे। जिन्ना ने सिकन्दर हयात के अंदर मुस्लिम लीग के प्रति कुछ झुकाव देखा था। अक्टूबर 1937 में लखनऊ की ऑल इंडिया मुस्लिम लीग कांफ्रेंस (मुस्लिम लीग सम्मेलन) में सिकन्दर हयात का भाग लेना यूनियनिस्ट पार्टी का एक प्रकार से मानसिक बंटवारा था। मुस्लिम सदस्यों का आधा मन पार्टी में और आधा झुकाव अपने धर्म के नाम पर मुस्लिम लीग में हो गया।

चौधरी छोटू राम की किसान, ग्रामीण पिछड़ों के लिए प्रतिबद्धता और कट्टर स्वभाव के कारण सिकन्दर हयात के जिन्ना के साथ गुप्त समझौता कर लिया कि पंजाब में तो आर्थिक आधार पर वे और उनका समुदाय चौधरी छोटू राम के साथ रहेंगे और राष्ट्रीय स्तर पर मुस्लिम लीग के साथ। इस प्रकार यह जिन्ना की बहुत बड़ी सफलता थी। उसने भविष्य की पूर्ण सफलता के उद्देश्य से पंजाब में मतभेद तो डाल ही दिया था, हालांकि 1936से 1942 तक के अपने शासनकाल में सर सिकन्दर हयात ने पंजाब में कभी मुस्लिम लीग के साथ देने का साहस नहीं किया तथा कानून और शांति के प्रति जनता के (चौ. छोटूराम के अनुसार) विश्वास को बनाए रखा।

चौ.छोटूराम भी जिन्ना के उद्देश्य और भावना को भली प्रकार समझते थे। अतः पंजाब को सुरक्षित रखने के लिए वे सदा मुस्लिम लीग के प्रति अपनी पार्टी की नीति स्पष्ट करने के लिए सिकन्दर हयात पर जोर डालते रहते थे, जिसके फलस्वरूप सिकन्दर हयात भी वही करने को मजबूर थे जो चौ.छोटू राम चाहते थे।

जिन्ना और चौ.छोटूराम की एक मीटिंग ममदौत विला में तीन घंटे चली। इस बैठक में जिन्ना का तर्क था कि यूनियनिस्ट पार्टी का हर सदस्य मुस्लिम लीग का सदस्य है। अतः पंजाब में वास्तव में मुस्लिम लीग की ही सरकार है। छोटूराम को जिन्ना ने मुस्लिम लीग सरकार में कैबिनेट मंत्री बनाने का प्रलोभन भी दिया। चौधरी छोटूराम ने जिन्ना से साफ कह दिया कि यूनियनिस्ट पार्टी पूर्ण गैर-साम्प्रदायिक और धर्म निर्पेक्ष पार्टी है। इसका आधार जनता का आर्थिक हित करना है, इसलिए यह सिर्फ धर्म के आधार पर मुस्लिम लीग में नहीं बदली जा सकती।

सर छोटू राम द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्य

पंजाब के यूनियनिस्ट पार्टी का मंत्रिमंडल बना। सर सिकंदर हयात खां इसके प्रीमियर और छोटू राम विकास मंत्री बने। मंत्रिमंडल बनते ही, चौ.छोटू राम ने विकास का कार्य प्रारंभ किया। इस उद्देश्य से जिन कानूनों का निर्माण किया गया, उनकी सूची इस प्रकार है।

1. पंजाब इंतकाल आराजी एक्ट-इसके आधार पर खेती करने वाले साहूकारों को किसानों से अलग कर दिया गया। रहनशुदा जमीन की उत्पादकता घटने पर रोक लगाई गई।

2. बंधक भूमि वापस एक्ट-इसके द्वारा 8जून 1901 से पहले ही रहन-शुदा जमीन को मुक्त वापिस करा दिया गया। इस कानून से 3,65, 000 किसानों को फायदा हुआ और 8,35000 एकड़ भूमि किसानों को वापस मिली।

3. पंजाब कृषि- उत्पादन मार्किंग-एक्ट- इस एक्ट के फलस्वरूप मंडियों का पंजीकरण किया गया, महजानों को लायसेंस लेना अनिवार्य बना दिया गया, मंडी कमेटी में 2/ 3 प्रतिनिधि किसानों के और 1/3 महाजनों के निर्धारित किए गए।

4. पंजाब रजिस्ट्रेशन ऑफ मनी -लैंडर्ज एक्ट- इस एक्ट के आधार पर ब्याज पर रुपया देने का धंधा करने वाले महाजनों को नियंत्रित किया गया। इससे अनाप-शनाप ब्याज लेने की योजना घट गई।

5. ट्रेड एम्पलाइज एक्ट-इस एक्ट में कामगारों, मुनीमों और मजदूरों को राहत दिलाई गई। उनके काम करने के घंटे निश्चित हुए, सप्ताह में एक दिन की छुट्टी मिलने लगी और नौकरी से अलग करने के लिए एक माह का नोटिस देना आवश्यक हो गया।

6. दि पंजाब वेट्स एण्ड मेजर्स एक्ट- इसके अनुसार व्यापारियों के बाटों को तोलने और उसके जांच का कार्य प्रारंभ हुआ। फलतः खरीददारों को निर्धारित मात्रा में कम तोलकर देने और विक्रेताओं से अधिक तोलकर लेने की आदत पर रोक लगी।

7. कन्सीलियेशन बोर्ड की नियुक्ति- इसके द्वारा किसानों को सुविधा दी गई कि ऋणी व्यक्ति आठ आना की कोर्ट फीस पर अपने ऋण को घटाने का प्रार्थना पत्र दे सकता था।

8. बिक्रीकर कानून- इस कानून द्वारा 5,000 की वार्षिक बिक्री पर लगाया गया।

इन कानूनों के अलावा किसानों तथा गरीबों की हालत सुधारने के लिए कुछ कदम और भी उठाए गए। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:-

1. गांवों में उद्याग धंधे खोलने की योजना को मूर्तरूप दिया गया, ताकि ग्रामीण क्षेत्र की आर्थिक उन्नति हो और शहरों तथा कस्बों में आबादी का दबाव न बढ़े।

2. शुद्ध घी में वनस्पति घी न मिलाया जा सके, अतः उसमें रंग डालने का कानून बनवाया।

3. किसानों की सहायता करने के लिए 55 लाख रुपये का एक कृषक सहायक कोष सरकार द्वारा स्थापित कराया गया, ताकि ओले, टिड्डी, बाढ़ तथा सूखा द्वारा की गई हानि की स्थिति में किसानों की सहायता की जा सके।

4. जाट हीरोज मेमोरियल सकूल रोहतक में हीरक-जयंती समारोह के आयोजन द्वारा हिंदू-मुस्लिम एकता को दृढ़ किया गया। इस आयोजन की अध्यक्षता यूनियनिस्ट पार्टी के प्रीमियर पर सिकन्दर हयात खां से कराई।

5. 29 नवंबर 1942 को दिल्ली के तीस हजारी मैदान में अखिल भारतीय वर्षीय जाट महासभा का अधिवेशन आयोजित कराके अपनी राष्ट्रीय नीति की स्पष्ट घोषणा की और समस्त जाति को राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के साथ जोड़ दिया।

6. अंबाला केंट के ब्रिगेडियर चर्चिल के यह कहने पर कि यदि इंग्लैंड की सरकार ने द्वितीय विश्व युद्ध में विजयी होने के बाद, भारत को स्वराज नहीं दिया तो आप क्या करेंगे? चौ.छोटू राम ने कहा था- उस हालत में मैं

वजारत से त्याग पत्र दे दूंगा, तलवार हाथ में लेकर अंग्रेजी-राज्य के खिलाफ बगावत कर दूंगा। मैं गांधी जी का चेला नहीं हूं कि गिरफ्तारी होकर जेल में जाऊं।

7. अकाली दल द्वारा पेश की गई आजाद पंजाब योजना का विरोध किया। इस योजना द्वारा अंबाला, जालंधन और लाहौर डिवीजन के एक भाग को मिलाकर आजाद पंजाब बनाने की बात कही गई थी। इस योजना का विरोध आपने यह कहकर किया था कि यदि मेरा बस चलेगा तो देश का विभाजन नहं होने दूंगा।

8. वायसराय लार्ड वेवल गेहूं की कीमत छः रुपये प्रति मन निश्चित कराना चाहता था और आप 11 रुपये प्रतिमन। वायसराय ने जब अपनी बात रखने के लिए जोर दिया तो आपने कहा, मैं पंजाब का गेहूं खेतों में जलवा दूंगा, पर छः रुपये के भाव पर गेहूं नहीं बिकने दूंगा। उनकी बात का फल यह हुआ कि सरकार ने 11 रुपये प्रतिमन के हिसाब से गेहूं खरीदा। इस प्रकार से पंजाब के किसान को बहुत फायदा पहुंचाया।

9. राजस्थान के सामंत तथा राजे- महाराजे अपनी जनता का शोषण करते थे। शोषण यहां तक था कि सामान्य स्त्रियां न तो नाड़ा बांध सकती थीं और न शादी -विवाह में दूल्हा घोड़े पर चढ़ सकता था। आपने इस शोषण का विरोध करने के लिए शोखावटी के सीकर नामक स्थान पर एक यज्ञ आयोजन में योग दिया, स्वयं उनमें शामिल हुए और जनता की स्वाधीनता की लड़ाई को आगे बढ़ाया।

10. लोहारू राज्य में साधारण जनता को बहुत परेशान किया जाता था। इसके विरोध में वहां जाट किसानों ने एक आंदोलन खड़ा कर दिया था। आपने उस आंदोलन को बढ़ावा दिया।

11. अपने बचपन के साथी और ग्रामवासी चौ.कल्लू सिंह का सिंध से पांच हजार बोरी चावल लाकर पंजाब में बेचने का परमिट आपने रद्द करा दिया। आप चौ.कल्लू सिंह को व्यापार का अधिकारी नहीं मानते थे। अतः उनको परमिट मिलने के पक्ष में भी न थे। चौ.कल्लू सिंह को यह सुनकर कि परमिट पाने में उनके छः सौ रुपये खर्च हुए हैं। आपने उनको अपनी ओर से छः सौ रुपये दिला दिए और सिंध प्रीमियर को फोन करके परमिट रद्द करा दिया। यह था आपका आदर्श और न्यायप्रियता। जिसकी मिसाल, कांग्रेसी मंत्री तथा अधिकारियों में ढूंढने से नहीं मिलती। चौधरी छोटू राम एक व्यक्ति नहीं एक संस्था थी, जिसमें शिक्षा पाकर आदमी के मन में आदमी के लिए प्रेम उत्पन्न होता है, इंसानियत के प्रति लगाव पैदा होता है और गरीबों की सहायता करने के लिए एक नशा चढ़ जाता है। वह एक ऐसा शिक्षालय थे जहां राजा और रंक, गरीब और अमीर, ब्राह्मण और मेहतर एक स्थान पर, एक साथ बैठने का प्रशिक्षण पाते हैं। वह एक आदमी नहीं, एक विचार अथवा दर्शन थे, जो इंसान से प्यार करना सिखाता है, जो अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्म और नैतिकता का मुखौटा लगाकर जनता को धोखा देने की साजिश नहीं करता, जो राजनीति अथवा लोकतंत्र को अपने अथवा अपने परिवार के उत्कर्ष की सीढ़ी नहीं बनाता, जो राजनीतिक उत्कर्ष- यान पर सवार होकर जनता को उपेक्षा तथा हिकारत की नजर से नहीं देखता, जो मंत्री के आसन पर बैठकर भी गरीब जनता, मजदूर तथा किसानों के बीच में रहता है, उनकी समस्याओं को समझता है, उनके दुःख तथा दर्द में शामिल होता है, उनके सब्ज-बाग नहीं दिखाता, बल्कि उनकी तकलीफों को मिटाता है, उनको राष्ट्र-निर्माण का आवश्यक अंग बनाता है।

मेरा विश्वास है कि यदि पंजाब-कांग्रेस के तथाकथित देशभक्तों ने उनकी जनवादी नीतियों का विरोध न किया होता तो वह पंजाब को स्वर्ग बना गए होते और कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के नेताओं ने देश और जनता की भावनात्मक एकता को ध्वस्त न किया होता, तो वह राष्ट्रीय और राष्ट्रीयता की अडिग भावना से भर गए होते। उस स्थिति में हमारा देश बड़ी-बड़ी शक्तियों से भी टक्कर लेने में समर्थ होता और यदि कोई हमारे ऊपर युद्ध लाद भी देता तो हम उसका मुंह तोड़ सकने की स्थिति में होते। लेकिन जिस प्रकार हर प्रगतिशील क्रांतिकारी के रास्ते में सत्ता तथा सम्पति के अधिकार पर बैठे अथवा नजर रखने वाले वर्ग ने रोड़े अटकाए हैं, उसी प्रकार चौधरी छोटू राम के मार्ग को भी स्वार्थी वर्ग ने कठिन बनाया था। लेकिन साहसी लोग, हर मुश्किल को पार करके आगे बढ़ते हैं। चौधरी छोटू राम भी आगे बढ़े और पंजाब के बहुसंख्यक किसान वर्ग को भी आगे बढ़ाया।

-संकलनकर्त्ता व प्रेषक : रवि मलिक, रोहतक

चौ0 छोटूराम को सर की उपाधि

- जे.एस. ढ़िल्लो,
प्रचार सचिव,
जाट सभा चंडीगढ़/पचकूला

अंग्रेज सरकार चौ. छोटूराम की लोकप्रियता, सिद्धांतप्रियता, दबंग व्यक्तित्व और सैकूलर कार्यकम से इतनी प्रभावित हुई कि उनके द्वारा अंग्रेजों की उपेक्षाओं के करने पर भी, मार्च 1937 में उनको सर की उपाधि से विभूषित किया। सर चौ. छोटूराम कहा करते थे, अंग्रेज जो भी दें, ले लेना चाहिए, परन्तु अपनी राष्ट्रीयता, धर्मनिर्पेक्षता, स्वाभिमान और जनसेवा कार्यक्रम कायम रखने चाहिएं। झुकना गिरावट है। सिर ऊंचा करके चलने में शान है। सर की उपाधि प्राप्त करने पर भी चौ. छोटूराम ने अंग्रेजपरस्ती कभी नहीं की।

चौ. छोटूराम सच्चे देशभक्त तथा अंग्रेज विरोधी थे, यह बातें निम्न प्रमाणों से सिद्ध हो जाती हैं :-

1. रोहतक डी.सी. मि. वोल्सटर को नीचा दिखाया।
2. देश की परतन्त्रता उन्हें कांटे की तरह चुभती थी।
3. गर्वनर मालकम हेली के निर्णय का विरोध कर गेहूं का भाव 6रू. मन से 11 रू. मन करवाया गया।
4. 23 दिसम्बर, 1943 ई. को जाट रैजिमेन्ट सैन्टर बरेली में ऐतिहासिक दरबार में अंग्रेज अफसरों को फटकारा।
5. 29 नवम्बर, 1942 ई. को दिल्ली के तीस हजारी मैदान में जाट महासभा में कहा था कि जाट भारत को जल्द से जल्द स्वतन्त्र देखना चाहते हैं।
6. 1942 ई. में अम्बाला में कहा यदि अंग्रेज हमें आजादी नहीं देंगे तो मैं मन्त्री पद छोड़कर तलवार लेकर लड़ूंगा।
7. चौ. साहिब अखंड भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति चाहते थे।
8. सन् 1944 ई. में जिन्ना को कान पकड़कर पंजाब से बाहर निकाला।

1. चौ. छोटूराम को किसानों गरीबों की बिगड़ी हुई हालात देखकर बडा दुख होता था। उन्होंने 'जाट गजट' व 'जमीदारी लीग' का प्रयोग करके सरकार को सचेत किया तथा किसान मजदूर एवं गरीबों में जागृति पैदा की। उन्होंने रोहतक के डी.सी. के सचिव को पत्र लिखा तथा कहा कि ''मैं आपको वास्तविक स्थिति की सूचना देता हूं। जैसे कि आप समझते होंगे, चौ. छोटूराम की जमींदार लीग और कांग्रेस में अब थोडा ही अन्तर है। मेरा जाट गजट अंग्रेज सरकार के विरूद्ध ऐसा ही प्रचार कर रहा है, जैसा कि कांग्रेस।''

2. सन 1923 ई. में रोहतक के डी.सी. लिकन ने 'जाट गजट' के बारे में लिखा था कि ''राय बहादुर चौ. छोटूराम ने जाट जाति के उत्थान के लिये 'जाट गजट' प्रचलित किया था। किन्तु यह तो जमींदार पार्टी की कट्टर समर्थक बन गया है और सरकारी कर्मचारियों पर दोष लगाकर उनको लगिात कर रहा है। प्राय: यह कांग्रेस के अभिप्राय जैसे विचार प्रकट करता है।''

3. नवम्बर, 1929 ई. के रोहतक भाषण में आपने कहा था कि ''हम गोरे महाजनों का शासन बदलकर काले महाजनों का राज्य नहीं चाहते। हम चाहते हैं कि भारत वर्ष में किसान मजदूर का राज्य हो।'' (जाट गजट, 27 नवम्बर, 1929, पृ. 4)

4. सन 1938 ई. में एक भाषण में कहा था कि ''देहाती, जमींदारों, गरीबों, किसानों और मजदूरों के लिए काले महाजनों एवं गोरे महाजनों में कोई अन्तर नहीं है। हम नहीं चाहते कि ब्रिटिश सरकार जो कि व्यापारियों की सरकार है, के स्थान पर भारतीय व्यापारियों की सरकार बने। किसान नहीं चाहते की एक साहूकार से आजाद होकर इसी प्रकार के दूसरे साहूकार के अधीन हो जायें।''

5. अंग्रेजों द्वारा भारतीय किसानों को गउन्मुजोरे कहे जाने पर आपने 1933 के जाट गजट में लिखा था कि ''मुझे क्षमा करना। सरकार मुझे यह बताये कि वह भूमि के मालिक किस तरह है और हम आपके मुजारे क्यों हैं।'' (बेचारा जमींदार 19 जुलाई, 1933 जाट बजट)।

6. 9 अगस्त, 1933 ई. के जाट बजट में आपने लिखा था कि जिस प्रकार अंग्रेज सरकार किसान, मजदूर और गरीब का शोषण कर रही है। इससे छुटकारा पाने का केवल एक ही रास्ता है वह है संगठन बनाकर सरकार के विरूद्ध लड़ना।

7. 2 मार्च, 1931 ई. को आपने जाट गजट में लिखा है सरकार नाडी तो काट देती है। किन्तु उस पर कोई औषधि नहीं लगाती। ये जनता का शोषण करती है।

8. आपने अदालत में बोलते हुए एक बार पुलिस को झूठ बोलने में निपुण कहा और यहां भी कहा कि ''अगर पुलिस का यही हाल रहा तो इस सरकार का तख्ता पलट जायेगा।'' यह सीधे तौर पर अंग्रेजी सरकार के मुंह पर तमाचा था।

9. मई, 1943 ई. में लाहौर छावनी में हरिजनों का एक सामाजिक सम्मेलन हुआ। वहां पर आपने उनको खुलकर उपदेश दिया कि हरिजनों स्वराज्य प्राप्ति के रास्ते में रूकावट मत डालों। भारत आजाद होने पर सभी जातियों को बराबर का अधिकार मिलेगा तथा आरक्षण भी होगा।

10. 2 फरवरी, 1938ई. में एक विशाल जलसे में आपने कहा था कि ''मैं न कभी अंग्रेजों का खुशामदी था और न कभी होऊंगा।

शेर पिंजरे में भी शेर ही रहता है, गीदड़ नहीं बन जाता।

चौ. छोटूराम कहा करते थे कि वर्तमान युग प्रगति की उन्नति का युग है। यह युग ज्ञान विज्ञान का युग है। ये युग कला कौशल का युग है। ये युग लेखनी वाणी का युग है। यह युग संगठन का युग है। परन्तु बेचारा कृषक है कि आधुनिक युग की समस्त विशिष्ट विशेषताओं से सर्वथा अनभिज्ञ व अछूता है। पुरानी कुण्ड का ठिकरा है और यह समझता है कि यह संसार ऐसे भी क्या मानवीय व्यवहार से रहित होगा कि इसको एक अपवित्रा व निरर्थक पदार्थ की भांति, अपने पाट्टव की एक ठोकर से ठुकरा दे। कैसा भोला मनुष्य है। प्रतिदिन देखता भी है कि मनुष्य जब नींबू से रस निकाल लेता

है तो नीरस छिलके को दूर फेंक देता है और यथा सम्भव इतनी सावधानी बरतता है कि छिलका इतनी दूर फेंका जाए कि पुनः पैर के नीचे आकर पिफसलने का कारण न बने। अय मेरे प्रिय बन्धु! मेरे आदरणीय कृषक, यह तमाशा देखकर भी तूने कोई सीख नही ली! हां! मैं भी कैसा प्रश्न पूछ रहा हूं। कृषक की पहचान उसकी यही विशेषता है कि देखे और फिर न देखे। इसके नयनों से दूर दृष्टि कहां ? आंखो से कुएं व जोहड़ दीख जाए बस इसकी दृष्टि की सीमा यहीं तक है। शत बार ठोकर खाकर भी मार्ग में पड़े पत्थर से सावधान न होना यही तो कृषक की निराली शान व पहचान है।

कृषक क्या है ? प्राचीन सभ्यता का एक स्मारक है। पुरातन संस्कृति का एक अवशेष है। विशाल जलपोत आए, रेल आई, तार आई, बिना तार का तार आया, विमान आया। विज्ञान के अविष्कारों नें देश व काल का नाक में दम कर दिया। सागर के तल पर तथा व्यापक आकाश में अपनें उत्पात मचाने वाले यन्त्रों की पहुंच का विज्ञान नें चकित कर देने वाला प्रमाण हमारे सम्मुख रखा, परन्तु कृषक है कि अपनी उसी पुरानी चाल से चल रहा है। युग बदला, राज पलटा, परिस्थितियां बदल गईं, अड़ोसी पड़ोसी बदले। यदि कोई न बदला तो कृषक नही बदला। वही हल, वही गड्ढा, वही रहट और वही कोल्हू, वही कस्सी और वही खुर्पा। मित्र, बन्धु बान्धव, हितैषी और शुभ चिन्तक कहते कहते थक गए कि भाई कुछ हिलो, सरको। ये युग क्रियाशीलता का है, गति का है। यह युग विकास का है परन्तु——

'जमां जुम्बद न जम्बद गुलमुहम्मद'

अर्थात् साराधम भले ही हिल जाए परन्तु गुलमुहम्मद नहीं सरकेगा। सम्भवतः कृषक यह समझता है कि न बदलना, न हिलना जुलना, यह भी अमानवीय आचार संहिता का अटूट अंग है। काल भले ही अपनी चाल को बदल ले परन्तु मेरा बदलना मेरी प्रतिष्ठा व मेरी शान के विरूद्ध है।

परन्तु ऐ कृषक बन्धु सुन! यह हठधर्मी तज दे। मैं भी तेरा भाई हूं। तेरे ही भाई चारे का तुच्छ सदस्य व सेवक हूं। तेरा सच्चा हितैषी हूं। तेरे वर्ग का निष्ठावान सेवक हूं। शीत ऋतु में पतला मलमल का वस्त्र पहनना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। जब युग बदल गया है तो तू भी बदल। जब परिस्थितियों ने करवट बदली है तो तू भी अपने भीतर कुछ परिर्वतन ला। तीर व तलवार का समय चला गया अब बन्दूक, मशीनगन, बम व विशैली गैसों के शस्त्राों से युद्ध लड़ा जाता है। अब ढाल जलवार को टांड पर रख दे। अपने आप को नए नए अस्त्रों शस्त्रों से सुसज्जित कर और यदि तू ऐसा नही करेगा तो फिर कुछ बनने वाला नहीं।

तू अपनी प्रतिष्ठा को मारता है परन्तु, यह नही देखता कि तेरा अस्तित्व ही संकट में है। तू आचार व्यवहार का अनुगामी बनता है, परन्तु यह पता ही नही कि तेरे ऊंचे व्यवहार की सर्वसामग्री लुट चुकी है। तू आईने वपफा ;निष्ठा व निभानेद्ध की दुहाई देता परन्तु, इस तथ्य को नही जानता कि आध ुनिक सभ्यता ने इस विचार को ही निषिद्ध व निरस्त कर दिया है। तू अपनी इस सोच व व्यवहार पर मुग्ध है। तू अत्यन्त निश्चिन्तता से गुनगुनाता है–

'खामोशी गुफतगू है, बे जबानी है जुबां मेरी'

'है चुप्पी वार्ता मेरी, मेरा है मौन ता वाणी'

यदि नास्तिकता का युग न होता, यदि भौतिकवाद ने आध्यात्मिकता का दम न घोट दिया होता, यदि सत्य, सरलता तथा न्यायप्रियता का राज होता तो मैं तुझे तेरी अन्ध श्र(ा पर बधाई देता। परन्तु ऐ पीड़ा की प्रतिमा सुन! अपने चारों ओर के वातावरण पर दृष्टिपात कर। यह सतयुग का का काल

नही है। कलयुग की बेला है। आज विश्व की अभ्यता पर आध्यात्मकता का प्रभुत्व नही है प्रत्युत सब कुछ भौतिकवाद में फंसा धंसा दिखाई देता है। रामराज भी नही है। हारूं रशीद का शासन भी नही है। ऐशिया की सभ्यता का सूर्य जो अध्यात्मिकता के सब स्त्रोात सूख गए है। यदि तू जीना चाहता है तो अपना रंगढंग बदल दे। एक दम अपनी जीवनशैली बदल डाल। निस्तब्धता के स्थान पर सर्वथा गतिमान हो जा। मूकता को तजकर तू कुछ बोलने लग जा। चुप्पी के स्थान पर तो पुकार बन जा, वाणी रूप हो जा।

ऐ कृषक भाई! तू अपने अस्तित्व की जीवन की चिन्ता कर। विपदा आने वाली है। तेरे विनाश की आकाश में चर्चा चल रही है, विचार विमर्श हो रहा है। तनिक देख के क्या हो रहा है और क्या होने वाला है। बीती बातों को दोहराने और कहानियां कहने में क्या धरा है? तू कब तक चुप्पी साधे रहेगा? अपनी मांगो व अधिकारों के लिए पुकार करने का स्वाद चखकर देख। अरे कृषक! तू भूमि पर हो परंतु तेरी आवाज गगन में गूंज उठे। ऐ धरती के अन्नदाता! यदि तू नही समझेगा तो मिट जाएगा और संसार में तेरी कहानी कहने सुनने वाला भी कोई न होगा। 'कौन तुझे याद करेगा ?'

ऐ कृषक बन्धु! यदि जीवित रहना चाहता है तथा अपने निष्क्रिय निकम्मे अस्तिव से कुछ अधिक प्रतिष्ठित पद पर पहुंचने की कामना रखता है तो संग्राम के, संघर्ष के नए नए ढंग तू भी सीख। मौन का परित्याग कर। चुप्पी पर धिक्कार भेज। अरे रोना धोना, चिखना चिल्लाना व शोर मचाना कुछ तो सीख ले। तू भी परख कर देख तो सही कि तेरे रूदन का कुछ प्रभाव पड़ता भी है या नही। चुप्पी का साधन तो बहुत देख लिया, बर्त लिया। दीर्घकाल तक इसका प्रयोग कर लिया। यह ढ़ंग लाभप्रद नहीं। इससे हानि ही हानि है। मौन के मार्ग पर बहुत लम्बे समय तक चलकर देख लिया। यह मार्ग ध्येयध ाम तक पहुंचाने वाला नहीं है। अब तक तू कुपथगामी रहा। अपना पग पीछे हटा। दिशा बदल। शोर मचा, नारेबाजी कर। पुकार व चित्कार कर। दुहाई व तिहाई का मार्ग अपना। फिर देख तेरे प्रियतम का द्वार तुझे अतिशीघ्र दिखाई देगा और वह बहुत जिसे बेपीर जिस नेता को तू निगुरा मानता रहा है, कितना पीरी का पात्र निकलता है।

ऐ कृषक! चौकस होकर रह। सावधान हो जा। सजगता से काम ले। यह सारा संसार ठगो की बस्ती है और तू बड़ी सहजता से ठगों के जाल में फंसता है। जिनका तू लालन पालन करता है वे भी तेरे विरोधी बनकर तुझे कष्ट देते है और तुझे पता ही नही। कोई तुझे पीर बनकर लूटता है तो कोई पुरोहित बनकर लूटता है। कोई घूस से लूटता है तो कोई स्वंय ग्राहक बनकर तुझे लूटता है। कोई ग्राहक बनकर तेरी उफन सी उतारता है और कोई आढ़त से तुझे ठगता है। कोई कमीशन से तेरी सम्पदा को चट कर जाता है। कोई पिनाई में हाथ फेरी करता है तो कोई तुलाई में तेरी आंखों में धूल डालता है। कभी तो भाव में तुझ से छल किया जाता है तो कभी लेखे जोखे में तेरे साथ धोखा किया जाता है।

यदि तू कुछ सुखी सम्पन्न है तो तुझे कारू व हातिमताई बनाकर कुबेर व कर्ण दानी बताकर लूटने वाले डूम व भाट विद्यमान हैं। यदि तू कंगाल है तो साहूकार जोंक समान चिपट जाता है। तनिक सोच विचार कर देख। इतने भूतों से कैसे बचेगा। चुप्पी व गूंगापन से नहीं प्रत्युत आवाज लगाने से व पुकार करने से बात बनेगी। असहाय बनकर पड़े रहने से नहीं, संघर्ष व संग्राम कर। आलस्य व निद्रा का परित्याग कर। करवट बदल। उठ जाग! मुंह धो, कर्मण्यता व शोर करने के शस्त्र लेकर रणक्षेत्र में कूद पड़ और अपने शत्रुओं के छक्के छुड़ा दे। ये सभी बातें आज भी ज्यों की त्यों लागू होती हैं और बार–बार छोटूराम आज भी जागरूक होने को कह रहे हैं। उनसे यही संदेश हमें मिलता है।''

दीनबन्धु सर छोटूराम के असूलों/कारगर नीतियों पर ही चलना उनको सच्ची श्रद्धांजलि है

– लक्ष्मण सिंह फौगाट

सच्ची श्रद्धांजलि

आज का दिन बसंत पंचमी व दीनबन्धु सर छोटूराम के जन्म दिन के रूप में मनाया जाता है। ऐसे विशेष मौकों पर हमने अपने जीवन को ऐसी महान आत्मा के असूलों/नीतियों पर ही चलकर उनको सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करना है जैसे उन्होंने हमारे को नसीहत दी थी कि एक तो बोलना सीख ले और एक आदमी को पहचान ले। इसलिए हमने किसानों और कामगार वर्ग के हितों की सुरक्षा को सुनिश्चित करन वाली पंचायत, प्रशासन तथा सरकार की स्थापना/पहचान करनी चाहिए जैसे सर छोटूराम ने अंग्रेजों की सरकार में हिस्सा लेकर उनकी गलत नीतियों का विरोध करते हुए किसानों व कमेरा वर्ग के हितों के लिए वाडे और किसानों और कमेरे वर्ग के आर्थिक, सामाजिक, कष्टपूर्ण जीवन को सुधार कर उनकी उन्नति को सुनिश्चित किया, जिससे सर छोटूराम दीन दुखीयों के दिलों में बैठने के कारण ही दीनबंधु कहलाने लगे।

जन्म और शिक्षा

सर छोटूराम जी का जन्म 24 नवम्बर, 1881 को गाँव गढ़ी सांपला ज़िला रोहतक में एक साधारण जाट किसान चौधरी सुखीराम के घर हुआ। आपकी माता का नाम श्रीमति सिरयां देवी था। परिवार में आप सब से छोटे होने के नाते घरवाले आपको लाड़-प्यार से छोटू कहने लगे इसीलिए आपका नाम छोटूराम पड़ गया। होनहार बालक के होत चिकने पात इसलिए आप भविष्य में महापुरूष हुए। आपने प्राइमरी परीक्षा में जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करके वजीफा प्राप्त किया। शिक्षा के दौरान अर्थात 10–11 वर्ष की आयु में ही आपका विवाह श्रीमति ज्ञानोदेवी के साथ सम्पन्न हुआ। इसके बाद मिडिल परीक्षा में भी आपने दूसरा स्थान प्राप्त करके वजीफा प्राप्त किया। छोटूराम के पिता के पास पैसा न होने के कारण उनके चाचा राजेराम ने उनकी आगे पढ़ाई का खर्च देना स्वीकार किया और छोटूराम को दिल्ली के मिशन हाई स्कूल में दाखिला दिला दिया। वहां पर भी आपकी फीस माफ हो गई और छात्रवृति मिलने लगी। 1905 में छोटूराम ने दिल्ली कॉलेज से बी.ए. की परीक्षा पास की और संस्कृत विषय में विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान पर रहे।

नौकरी

बी.ए. करने के बाद सर छोटूराम ने कालाकांकेर के राजा रामपाल सिंह के पास नीजि सचिव की नौकरी की। सर छोटूराम की अध्यक्षता में 26 जनवरी, 1918 को मेरठ में अखिल भारतीय जाट महासभा के सम्मेलन होने पर आप गृहमंत्री चुने गए। जहां भी अखिल जाट महासंचालक के सम्मेलन हुए वहीं आप प्रधान संचालक रहे।

रोहतक में वकालत

सर छोटूराम को रोहतक में अपना भविष्य अधिक उज्जवल होने की आशा थी तो सन् 1912 मे वे रोहतक आ गए तथा चौधरी लाल चन्द भालौठ वाले के साथ मिलकर वकालत आरम्भ कर दी और वकालत आठ वर्ष तक चली। चौधरी लालचंद भालौठ वाले तहसीलदार के लम्बे अनुभव के कारण माल के मुकदमों की पैरवी करते थे। सर छोटूराम, चौ. लाल चन्द भालौठ वाले के साथ-साथ वकालत करने पर वो इनके काफी नजदीक होने के नाते कई मामलों में उनसे काफी सहयोग व सलाह लेते थे। अन्य वकीलों की तरह साधारण आदमी से दूर रहने की बजाए छोटूराम उनके निकट सम्पर्क में आने लगे जैसे किसानों के साथ नीचे बैठकर आप हुक्का पीने के साथ-साथ उनकी समस्याएं सुनते थे।

जाट हाई स्कूल रोहतक की स्थापना

26 मार्च, 1913 ई. को रोहतक में जाट 'एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल' की नीव रखी। हिसार में डॉ. रामजीलाल तथा उनके भाई चौधरी मातुराम ने इस संस्था की स्थानना में पूरा सहयोग दिया। सर छोटूराम भी आर्य समाजी थे। चौधरी लालचन्द, चौधरी रामचन्द्र भी

समिति के सदस्य थे। सर छोटूराम को सर्वसम्मति से प्रबन्धकारिणी का महामन्त्री चुना गया। वे सन् 1921 तक इस पद पर बने रहे।

सर छोटूराम ने देहात के समझदार लोगों को बुलाया और उनकी सलाह से सन् 1921 में जाट हीरोज मेमोरियल हाई स्कूल की स्थापना की। इस संदर्भ में चौधरी लाल चन्द भाठौल वाले ने भी पूरा सहयोग दिया।

किसानों का शोषण

सर छोटूराम ने ग्रामीण किसानों एवं गरीबों की दुर्दशा तथा शोषण की बड़ी गहराई से जानकारी प्राप्त की। वे इस नतीजे पर पहुंचे कि जब तक किसानों के हितकारी कानून न बनेगें तब तक इनका शोषण होता रहेगा, कानून तब बदलेंगे तब किसानों की सरकार होगी। जिस प्रकार दीनबन्धु सर छोटूराम ने किसानों को संगठित करके अपनी समस्याओं के समाधान का मूलमंत्र दिया। वैसे ही अब समय रहते हमने भी संगठित होकर सर छोटूराम की नीतियों पर चलते हुए किसानों के हितकारी अथवा किसानों को कृषि संबंधित सुविधा देने वाली तथा उनकी फसलों का उचित मूल्य दिलवाने वाली सरकार का ही समर्थन करना चाहिए।

सर छोटूराम का राजनीतिक सफर

उपरोक्त दर्शाई गई किसानों की दूर्दशा व शोषण को दूर करने के लिए सर छोटूराम ने चौधरी लालचंद को चुनाव लड़ने के लिए तैयार किया और स्वयं झज्जर, सोनीपत हल्के से खड़े हुए और लालचंद को रोहतक, गोहाना हल्के से खड़ा किया। अतः चौधरी लालचंद निर्विरोध चुने गए।

सर छोटूराम ने अपने जीवन में संघर्ष का मार्ग तलाश लिया था। सन् 1923 में फिर चुनाव हुआ जिसमें सर छोटूराम सोनीपत, झज्जर से अपने प्रतिद्वंदीयों रिसालदार सरूप सिंह के सुपुत्र रिसालदार रणधीर सिंह को हराकर कई हजार मतों से विजयी हुए। उन्होंने चौधरी लालचंद भाठौल वाले को भी रोहतक, गोहाना हल्के से चुनाव लड़ने के लिए दोबारा तैयार किया और चौधरी लालचंद ने मातूराम सांघी वाले को 600–700 मतों से हरा कर विजय प्राप्त की। चौधरी लालचंद कृषि मंत्री बने। आपने 1923 में नेशनल यूनियनिस्ट पार्टी यानि जमींदार लीग की स्थापना की, जिसका मुख्य उद्देश्य पंजाब के पिछड़े वर्गों के लोगों व किसानों की उन्नति करना था।

कृषि मंत्री तथा उनके मुख्य कार्य

22 सितम्बर 1924 को सर छोटूराम को कृषि मंत्री बनाया गया। सर छोटूराम ने कृषि मंत्री बनते ही :-

1) मण्डी (हिमाचल प्रदेश) में जल विद्युत योजना आरम्भ की।
2) कृषि को पहला व उद्योगों को दूसरा स्थान दिलवाया।
3) 1925 में सहकारी समितियां स्थापित की।
4) भाखड़ा बांध योजना को मंजूरी दिलाई।
5) गावों में पशु चिकित्सालय तथा औषधालय खुलवाये।
6) सरकारी विभागों में किसानों को नौकरियां दिलाई।
7) स्कूलों में किसानों के बच्चों के लिए ५० प्रतिशत दाखिले सुरक्षित करवाये।
8) गावों में प्राइमरी व मिडल स्कूलों की संख्या बढ़ाई।
9) आर्य समाज की शिक्षण सस्थाओं को सरकारी अनुदान दिलाया।
10) शिक्षा संस्थाओं को सरकारी अनुदान दिलाया। जब आप शिक्षा मंत्रीबने तो झज्जर और बहादुरगढ़ के स्कूलों को सफल किया।

सर छोटूराम द्वारा भाखड़ा बांध का निमार्ण

भाखड़ा बांध योजना सर छोटूराम के दिमाग की ही उपज थी। उन्होंने चीफ इंजीनियर के साथ भाखड़ा बांध स्थल का निरीक्षण करके अन्तिम रूप देकर पंजाब असेम्बली से बिल पास करवा लिया था। सर छोटूराम ने 8 जनवरी, 1945 को शक्ति भवन, लाहौर में बतौर राजस्व मंत्री भाखड़ा बांध योजना पर अपने हस्ताक्षर किये, जो उनके अन्तिम हस्ताक्षर सिद्ध हुए।

सर छोटूराम सच्चे देशभक्त तथा अंग्रेज विरोधी थे

1) सर छोटूराम अंग्रेजो तथा प्रतन्त्रता के कट्टर विरोधी थे।
2) सर छोटूराम ने अंग्रेजो के निर्णय के विरूद्ध किसानों के हक में गेहूं का भाव 6 रूपये मन से 11 रूपये मन करवाया।
3) दिल्ली के तीस हजारी मैदान में 29 नवम्बर, 1942 को जाट महासभा में कहा कि हम देश को जल्द से जल्द स्वतन्त्र देखना चाहते है।

4) अम्बाला में 1942 में कहा कि यदि अंग्रेज हमे आजादी नहीं देंगे तो मै मंत्री पद छोड़कर तलवार लेकर लडूंगा।

5) सर छोटूराम को किसानों, गरीबों की बिगड़ी हुई हालात देखकर बड़ा दुख होता था। उन्होंने 'जाट गजट' व 'जमीदारी लीग' का प्रयोग करके सरकार को सचेत किया तथा किसान मजदूर एवं गरीबों को जागृत किया।

6) सन् 1923 ई. में रोहतक के डी.सी. लिकन ने जाट गजट के बारे में लिखा था कि 'राय बहादुर सर छोटूराम ने जाट जाति के उत्थान के लिए जाट गजट प्रचलित किया था। किन्तु यह तो जमींदार पार्टी का कट्टर समर्थक बन गया।

7) 1929 में रोहतक भाषण में आपने कहा था कि 'हम गोरे महाजनों का शासन बदल कर काले महाजनों का राज्य नहीं चाहते'। हम चाहते है कि सम्पूर्ण भारत में किसान और मजदूरों का राज हो।

8) अंग्रेजो द्वारा भारतीय किसानों को मुजारे कहे जाने पर आपने 1933 के जाट गजट में लिखा था कि 'मुझे क्षमा करना' सरकार मुझे यह बताए कि वह भूमि के मलिक किस तरह है और हम आपके मुजार क्यों है"

9) 9 अगस्त 1933 को जाट गजट में आपने लिखा था कि जिस प्रकार अंग्रेज सरकार किसान और मजदूर और गरीब का शोषण कर रही है। इससे छुटकारा पाने का केवल एक ही रास्ता है वह है संगठन बनाकर सरकार के विरूद्ध लड़ना।

10) 9 अगस्त 1933 को जाट गजट में आपने लिखा था जिस प्रकार अंग्रेज सरकार नाड़ी तो काट देती है किन्तु उस पर कोई औषधि ा नहीं लगाती ये जनता का शोषण करती है।

11) आपने अदालत में बोलते हुए एक बार पुलिस को झुठ बोलने में निपुण कहा और यह भी कहा कि अगर पुलिस का यही हाल रहा तो इस सरकार का तख्ता पलट जायेगा। यह सीधे तौर पर अंग्रेजी सरकार के मुंह पर तमाचा था।

12) 2 जनवरी, 1938 ई. में एक विशाल जलसे में आपने कहा था कि "मैं न कभी अंग्रेजो का खुशामदी था और न कभी होऊगां"। शेर पिंजरे में भी शेर ही रहता है गीदड़ नहीं बनता।

सर छोटूराम प्रभु गोद में

नवम्बर सन् 1944 के आरम्भ की बात है कि वे झंग की सभा में बुखार चढ़े रहने पर भी लगातार तीन घण्टे तक बोले। यह उनका अन्तिम सार्वजनिक भाषण था। बुखार तथा पेट दर्द की काफी गंभीर बीमारी होने के कारण अच्छे-अच्छे डॉक्टरों से इलाज करवाया लेकिन बाद में उन्हें तीक्ष्ण ह्रदय रोग हो गया।

9 जनवरी 1945 को वे सदा की भांति उठे, हाथ-मुंह धोकर अखबार पढ़ा, मिलने वालों के साथ बातें भी करते रहे। परन्तु 10 बजे उनको ह्रदय में पीड़ा होने लगी और गला घुटने लगा। प्राण त्यागते समय सर छोटूराम ने भुजायें फैलाकर खिज़र हयात खां का आलिंगन किया और धीरे से कहा हम चलते है, भगवान सब की सहायता करें। सर छोटूराम के स्वर्गवास की सूचना सुनकर हजारों लोग जिनमें हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, ईसाई सब शक्ति भवन पहुंच गए व सबने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ हल-तलवार के निशान वाले झण्डे में लिपटा हुआ उनका शरीर कमरे से बाहर निकाल कर कार में रखा गया। सैनिकों ने बन्दूके उल्टी झुकाकर सलामी दी। उनके पार्थिव शरीर को शक्ति भवन से प्रेम निवास रोहतक लाया गया। पंजाब के गर्वनर गैलसी,, मंत्री खिज़र हयात खां तथा पंजाब के अन्य गणमान्य नेता इस अवसर पर शामिल थे। आपका दाह संस्कार जाट हीरोज मेमोरियल हाई स्कूल रोहतक की सेठ चौ. छाजूराम बिल्डिंग के सामने किया गया। दाह संस्कार में काफी संख्या में स्त्री-पुरूष उपस्थित थे। चन्दन तथा अन्य काष्ठ समिधाओं से उस महापुरूष के शरीर को वशीभूत किया गया।

इस महान आत्मा की आज दिनांक 12 जनवरी, 2016 को जयंती के अवसर पर उनके असूलों तथा कदमों पर चलने का प्रण लेकर ही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

2-B, SECTOR 27-A, MADHYA MARG, CHANDIGARH
PH. : 0172-2654932, 2641127

जाट की सही पहचान

आन-बान और शान की खातिर, तज देता प्राण है।
यही है पहचान जाट की, यही सही पहचान है।
देव वही जो देता रहता, कदे रहवै ना ठाली है।
माली व रखवाली सबका, सबसे सदा महान है।
यही सही पहचान .....

मेहनत से यह कमा-कमा कै, खाता और खिलाता है।
पुलिस फौज में भर्ती होकै, सदा देश हित जाता है।।
ना पीछे कदम हटाता है और करता सही कमान है।
यही सही पहचान .....

झठ से करै फैसला सबका, ना तेरा ना मेरा है
सर्वमान्य सबको होता है, ना धर्म-कर्म का फेरा है।
पंच जहां परमेश्वर होता, सबका रखता ध्यान है।।
यही सही पहचान .....

ईर्ष्या, द्वेष, कलह और झगड़े फैली फूट बीमारी है।
इसलिए यह तगड़ी जाति सबसे नीचे जा रही है।।
नहीं समझ में आ रही इसकै लगती नहीं लगाम है।
यही सही पहचान .....

औमपाल क्या ख्याल जाट को कैसे कहा लूटा था?
यही लूटेरा बणा दिया तो रहग्या कौन कमेरा था?
पाया कौनी बेरा उसका, होगे हम हैरा हैं।।
यही सही पहचान .....

– ओमपाल आर्य 'भिवानी'

गीत

हाथ जोड़ के अर्ज करां सां म्हारा छोटा सा काम करदे।
इस भारत में फेर दोबारा तू, पैदा छोटू राम कर दे।।

1. बेरा कौन्या के के मांगे, लोग तेरे दरबार में,
तू दे दे वा चीज मिले ना, पैसों से बाजार में,
छोटू राम बिना नईया म्हारी, डूबै सै मझधार में,
जल्दी करके हमने दे दे, फायदा कौन्या वार में,
सबकी इच्छा पूरी करे तू, म्हारी भी घनश्याम करदे,
हाथ जोड़ के...

2. छाई उदासी उनके मन में, दोनू खडे लखावें थे,
जो मांगा सो हमनै दे दे, हरतैं दुवा मनावें थें,
टूट लिए सां बिन धन धौरी, मन मैं गुणगुणावें थें,
आ के बुझे दुख म्हारे की, छोटू राम नै चाहवें थें,
इब आजा तै महंगाई की, वो सारी रोकथाम करदे।

3. बात पेट की बतलावां सां, सुन ले नै भगवान तू,
बारा बाट कति हो रहे सां, देता क्यूं नै ध्यान तू,
जमींदार, मजदूर वर्ग पे, करदे नै एहसान तू,
किसी तरह से म्हारी विनती, श्याम ले नै मान तू,
घनी दुर्गति हो रही सै, आके खत्म तमाम करदे,
हाथ जोड़ के...

4. घना खौटा सै इब जमाना, हमने घना सतावै।
भीड़ पड़ी मैं म्हारे दुख की ना, कोए बुझन आवै।
भगवान सिंह भी खड्या सुनै था, गैल्यां शीश झुकावै।
कह गोच्छी आला म्हारी इच्छा, तू प्रभु न ठुकरावै।
नाम जपना उस भोले का, सुबह और शाम करदे।
हाथ जोड़ के...

प्रियंका

"बेटी की गुहार"

ऐरी री री मां
क्यूं शोक मना री री
क्यूं आंख सूजा री री
जीणे दे मैंने जीणे दें
मारण की क्यों ठानी मन में
अपनी लाडली बान्धी बचन में
हाथ जोड़ में कहरी री
मत बण गुंगी बहरी री
क्यूं शोक मना री री री

रोटी पोऊ लाऊ ज्वार
साफ सफाई रखु घर और ग्वारा
कदम-कदम में तेरे करू बन्दगी
फटा पुराना पहरू री
फिर क्यूं जुल्म करा री एरी री मां
क्यूं शोक मना री री

पढ़ लिख के बैनूं कलैक्टर
नाम करू तेरे कई हैक्टर
बणू कल्पना बणू सायना
ना मैं मांगू दूध मलाई
ना मैं मांगू पैट कढाई
फिर कोणसी लाचारी री
अपनी भी जेल करा री

भाई नशेड़ी बाप जुआरी
तेरी सेवा करू मैं तैने मना री
हाथ जोड़ फरियाद करू री
एक-एक सांस मैं तैनूं याद करूं
तेरी बेटी बेचारी री
सुन मेरी माँ गुहार मेरी री

दीनबन्धु सर छोटूराम पर कविता

24 नवम्बर 1881 को सर छोटूराम जब गढ़ी सापंला में पैदा हुए
तब किसान-मजदूर का बुरा हाल था।
समाज में अनपढ़ता और गरीबी थी और देश गुलाम था।
बचपन से ही समाज के उत्थान का ध्यान था।
शिक्षा की जोत जलाने वाला यही इन्सान था।
जमीनें गिरवी थी, कहने को जमींदार था।
किसान कर्जदार था दाने-दाने को मोहताज था।
यह जमीनों के मालिक नहीं थे यहां हर एक मुजारा था।
समाज को जमीन का मालिक बनाने का ही छोटूराम का नारा था।
सर छोटूराम इस कलयुगी जहां का सितारा था।
उनका अपना पराया कोई नहीं हर जाति का सहारा था।
लाखों अनपढ़ जाट किसान भरती कराए और आजादी की ठानी थी।
सर छोटूराम के इशारे पर बगावत से
आईएनए बनी तब अंग्रेजो ने हार मानी थी
रखवाला था हमारा सारे गुलिस्तान की जान था।
आगे आने वाले लोग सोचेंगे क्या धरती पर एक ऐसा भी इन्सान था।
समाज, देश का उत्थान करना, भाखड़ा प्रोजैक्ट उसी का काम था।
था किसान-मजदूर का मसीहा, वह इन्सान नहीं भगवान था।
समाज सेवा में जीवन लगा दिया, कभी सोचा तक नहीं समाज हमें क्या देगा।
अब समाज अपने अधिकार कायम रखने के लिए नाम तुम्हारा लेगा।
हमारा किसान, मजदूर मसीहा चौ० छोटूराम था।
कहने को छोटूराम लेकिन यह तो छोटा ही राम था।
कह मूलचन्द दहिया भाईयों सर छोटूराम के आदर्शों को अपना लो।
अपने मसीहा चौ० छोटूराम का घर-घर में फोटू लगा लो।

-मूलचन्द दहिया,
उपप्रधान, आरक्षण समिति हरियाणा
546ए/30, मूलचन्द चौंक, सोपीपत

With best compliments

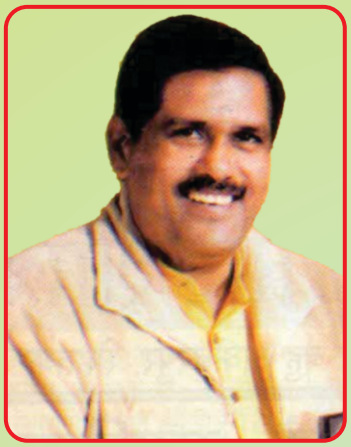

सभी को चौ0 छोटूराम की
134वीं जन्मदिवस और बंसत पंचमी
की हार्दिक शुभकामनाएं

कृष्ण ढुल

वरिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य,
भाजपा अध्यक्ष, नागरिक अधिकार सुरक्षा समिति
राष्ट्रीय महामंत्री, हिमालय परिवार

Millennium Manpower, Millennium Outsourcing,
Manpower Consultant (P) Ltd.,Millennium Catering
&
Housekeeping Services

SCO-42, Swastik Vihar, M.D.C. Sector-5, Panchkula
Mob.: 8901055891, 9779289400, 9878729489

With best compliments

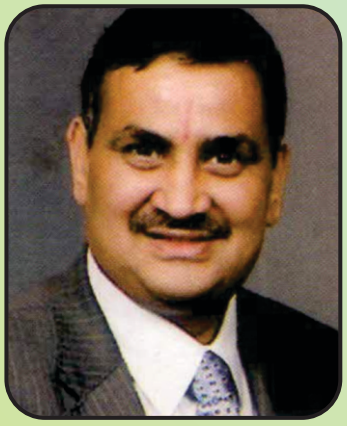

S.S. Chauhan
Chairman

Jai Parvati Forge Ltd.
Jai Parvati Restaurant Pvt. Ltd.
Jai Parvati Export Ltd.
Jai Parvati Auto Parts Ltd.
D.S. Engineers Pvt. Ltd.

Village Bhagwanpur, Barwala Road, Derabassi, Distt. SAS Nagar (Punjab)
Tel.: 01762-285100, 9872100042, 9216000072

खेलों के साथ-साथ शिक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान

चौ. भरत सिंह मलिक स्पोर्ट स्कूल (Boys) व भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक स्पोर्ट स्कूल (Girls)

खेल गांव निडानी (जीन्द) **English Mediumn**

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि आपके क्षेत्र के खेल स्कूल जो पिछले 26 वर्षो से खेलो के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। स्कूल के छात्र व छात्राएं खेलों में अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी व स्कूल की ख्याती प्राप्त कर क्षेत्र का नाम रोशन कर रहे हैं। जिसमें यहां के खिलाड़ियों द्वारा 19 स्वर्ण पदकों के साथ 50 से ज्यादा अन्य पदक जीतकर राष्ट्र का गौरव बढ़ाया है। इन परिणामों के फलस्वरूप यहां के सैंकड़ों छात्र-छात्राए खेलों के आधाार पर इस समय भिन्न-भिन्न विभागों में सरकारी सेवाएं दे रहे हैं। हाल ही में पिछले दिनों स्कूल के खिलाड़ियों की उपलब्धियों को देखते हुए केन्द्र व राज्य सरकार की खेल पॉलिसी के अतंर्गत 4 करोड़ 98 लाख रूपये खेल के खिलाड़ियों को दिये जायेगें। जिसमें 3 करोड़ रूपये यहां की अर्न्तराष्ट्रीय कबड्डी खिलाड़ी कविता सिवाच को दिए जाएंगे। 1 करोड़ 8 लाख रूपये अन्य खिलाड़ियों को दिए जायेगें।

अत: आप सभी अभिभावकगण अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए स्कूलों की सेवाओं का लाभ उठाएं।

नोट: भारतीय खेल प्राधीकरण द्वारा 25 पहलवानों की डे बोर्डीग स्कीम चलाई गई है, इस स्कीम में 8 से 14 वर्ष के बच्चे या राज्य स्तर पर कुस्ती में पदक विजेताओं को प्राथमिकता दी जाती है इस योजना में चयनित खिलाड़ियों को 2000 रू. की स्पोर्ट किट व 1000 रू. मासिक वजिफा दिया जाता है।

स्कूल के वार्षिक कार्यक्रम में खिलाड़ियों को सम्मानित करते हुए मुख्यअतिथि श्री मनोज सिंगल व पूर्व डी.जी.पी. डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक

विशेषताऐं :

- विशाल कम्पयूटर कक्ष।
- आधुनिक श्रव्य-संसाधानों द्वारा शिक्षा 2000 से अधिक पुस्तकों के संचय वाला पुस्तकालय।
- नियमित अध्यापक प्रशिक्षण शिवरों का आयोजन।
- खेल-कूद का बड़ा मैदान।
- नियमित रूप से विद्वद्जनों द्वारा निरीक्षण।
- सामूहिक वाद-विवाद के अवसर

दोनों विद्यालयों में विद्यार्थियों का शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास के लिए खेलों को उचित महत्व दिया जाता है तथा आयु वर्ग के अनुसार खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।